चन्दामामा
जुलाई १९९१
4 रु

मौज ही मौज
स्कूल में आए
नए फ़ेविक्रिल
स्टूडेंट पोस्टर कलर्स
ऐसा रंग जमाएं
रंग मुलायम उभरा-उभरा
तोता–हरा-हरा लगे खरा
चटख लाल, नीला,
चमकीला
सफेद निराला ज्यों बर्फीला
हर रंग अलबेला
तो झटपट चित्रों में रंग भरो
नए फेविक्रिल स्टूडेंट
पोस्टर कलर्स के संग
मौज करो !

देख तुम्हारा काम और
इसका दाम मम्मी हुई हैरान !

मुफ़्त
पेंट-ए-पोस्टर

नए फ़ेविक्रिल® पिडिलाइट
स्टूडेंट पोस्टर कलर्स

फेविकोल ब्राण्ड एढ्हेसिव्स के निर्माता पिडिलाइट की ओर से

नाम : ______ उम्र : ______
पता : ______
______
स्कूल ______

अपनी श्रेणी में सर्वोत्कृष्ट पेंसिलें

हर एक के लिए, सबके लिए

सुरेख. सुंदर. एक्ज़ेक्यूटिव और हर उस व्यक्ति के लिए जिन्हें चाहिए लिखने का नया अंदाज़. सहज और आसान लिखाई के लिए लगातार गहरी छाप. न टूटने वाली नोंकों के लिए माइक्रोनाइज़्ड लैड - जो इसकी उत्कृष्टता में लगाए चार-चांद!

लायन 'पिंकी' पेंसिलें. खूबसूरती और पूर्णता की पहचान. बच्चों के मन भाए इसकी सुंदर डिज़ाइनें और मनभावन रंग. न टूटने वाली नोंकों के लिए मज़बूती से जोड़ी गयी लैड. उस पर सहज और सरल लिखाई - इसकी खूबसूरती में लाए और निखार!

आर्टिस्ट, आर्किटेक्ट, डिज़ाइनर और इंजीनियरों जैसे व्यावसायिक व्यक्तियों के लिए एक परिपूर्ण इकाई. जो इनकी कारीगरी में भरे परिपूर्णता के रंग. एच से ६ एच और बी से ६ बी, एच बी एवं एफ़ तक की १४ विविध श्रेणियों में उपलब्ध.

लायन पेंसिल्स लि.
९५, पारिजात, मरीन ड्राइव,
बम्बई ४०० ००२.

National-358 HIN

स्टार-क्रॉस्ड

रैल्फ़ की भी सलाह, चलें अजायबघर की राह. राज़ ढूंढ़नेवाले यार तुरंत चल पड़े अपनी अपनी बीएसए एसएलआर पर सवार. विपुल ने कहा, "वाचमैन से पूछें." लेकिन कुछ न बोला वाचमैन मुछंडा. चोरी की जगह विपुल अड़ा, उसे अजायबघर के स्टाफ का एक बैज दिखा पड़ा. फिर वाचमैन ने बैज क्यों नहीं लगाया.

पूजा ने भी वाचमैन की मूछ का बायां हिस्सा झुका पाया. "ज़रूर होगी नक़ली," विपुल की सोच फली.

रिचमॅन्ड बीच

"वो देखो, स्टार क्रॉस्ड जूते की छाप," विपुल बड़बड़ाया अपने आप. रैल्फ़ ने अपनी बीएसए एसएलआर पर भरी चौकड़ी. उसे पुलिस बुलाने की पड़ी. दूसरे चारों को जूते की छाप गहरी गुफ़ा

तक ले गई अपने आप. वो क्या है?
एक बेचारा किस्मत का मारा जूता.
पूजा चिल्लाई, उसने कुछ ही दूर आगे एक नकली मूछ पाई.

गुफ़ा के भीतर

गहरी गुफ़ा अंधेरे की पूंजी, अचानक अन्दर आवाज़ें गूंजीं. अपनी अपनी बीएसए एसएलआर को ब्रेकमार राज़ ढूंढ़ने वाले यार छिपे होकर होशियार. "नाव 15 मिनिट में डॉक्स पर लगेगी" एक गुर्राया.
"बादशाह खुश होगा"
दूसरा टर्राया.
लेकिन कहां हैं रैल्फ़ और पुलिस?
विपुल ने अपनी बीएसए एसएलआर पर उनका पीछा किया और पूजा

जूते का रहस्य

को वहीं रहने दिया. रैल्फ़ और पुलिस आई, पूजा ने उनको डॉक्स की राह दिखाई. कुछ ही देर में चोर गिरोह गिरफ़्तार – खुश

हुए यार. एक चोर को मूंछ और जूता पकड़ाया.
फिर पूजा ने हुक्म सुनाया, "अपने बादशाह तक हमें ले चलो." विपुल ने अजायबघर का स्टाफ़ बैज भी उसे थमाया और कहा "अब तो बात और भी आसान हो गई भाया!"
बादशाह कौन है? और क्या... वो अजायबघर का वाचमैन ही तो है.

हम फिर आयेंगे और देवद्वीप का रहस्य तथा चिड़ियाचोरों का रहस्य जैसी अनेक कहानियां लायेंगे. तब तक चलाते रहो यार अपनी अपनी बीएसए एसएलआर.

चन्दामामा

संस्थापक : 'चक्रपाणी'
संचालक : नागिरेड्डी

सफलता प्राप्त करने के ये टोटके

हाल ही में राष्ट्रीय स्तर के एक समाचार-पत्र ने एक कार्टून प्रकाशित किया था जिसमें कुछ राजनीतिक दलों के नेताओं को ऐसे दिखाया गया जैसे कि वे किसी परीक्षा के लिए बैठे हों । उनके सामने जो प्रश्न-पत्र थे, उन सब पर एक ही शब्द लिखा था । कार्टून का शीर्षक था, 'सामूहिक नकल' ।

मुद्दा सामयिक था, क्योंकि बड़े शहरों से निकलने वाले कुछ समाचार-पत्रोंने कुछ ही दिन पहले यह खबर दी थी कि अपनी अंतिम परीक्षा के लिए बैठने वाले विद्यार्थियों ने बड़े पैमाने पर नकल मारी । प्रश्नों का उत्तर देते समय उन्होंने अपनी पाठ्य-पुस्तकों और अलग से तैयार किये गये नोटों इत्यादि, सब से मदद ली थी । वैसे नकल करके कुछ प्राप्त करना, चाहे वह परीक्षा पास करना ही क्यों न हो, गलत तो है ही । इस तरह वे विद्यार्थी जिन्होंने नकल की, उन विद्यार्थियों के प्रति अन्याय कर रहे थे जिन्होंने अपनी बुद्धि या स्मरण-शक्ति का सहारा लेना चाहा ।

वे दरअसल अपने साथ ही अन्याय कर रहे थे, बिना इस तथ्य को पहचाने कि नकल करके वे यह कभी जान ही नहीं पायेंगे कि उनकी अपनी योग्यता है क्या!

कभी-कभी हमारे सुनने में आता है कि जाने-माने खिलाड़ी भी खेलों में शामिल होने से पहले ऐसे नशीले पदार्थों का इस्तेमाल करते हैं जिससे उनमें कुछ समय के लिए ज़्यादा दम और शक्ति बनी रही । है तो यह भी गलत ही न! इसी प्रकार घुड़-दौड़ में बाजी मार ले जाने के उद्देश्य से घोड़ों को भी नशीले पदार्थों का सेवन कराया जाता है ।

क्या यह दुर्भाग्यपूर्ण नहीं होगा कि सफलता प्राप्त करने के ये टोटके जीवन में अंततोगत्वा असफलता के द्वार पर ही ला खड़ा करें?

वर्ष : ४३ जुलाई १९९१ अंक : ११
एक प्रति : ४ रुपये वार्षिक चन्दा : ४८ रुपये

TALLEST
1. What was the height of the tallest man in the world?
2. Move three buttons and make the triangle face the other way.
3. What is the distance between the Earth and the Moon?
4. Name the family of Angles
FREE GIFT for the first 1000 all correct answers.
OMEGA
S·O·N·Y
OMEGA
Sony
MATHEMATICAL DRAWING INSTRUMENTS
ART NO. 1635
Hurry, your answers must reach us before 31st August, 1991.
OMEGA
GEOMETRY MADE FUN
Please attach this advertisement with your answers and mail them to:
Allied Instruments Pvt. Ltd. 30 CD, Govt. Industrial Estate, Kandivli (W), Bombay 400 067.
3 Brothers/OS/2691

बंगलादेश में भी महिला प्रधान मंत्री!

इधर बंगलादेश में अब एक महिला ही प्रधान मंत्री बनी है । इस उप महाद्वीप के तीन देशों में इस से पहले महिलाएं शासनाध्यक्ष रह चुकी हैं ।

सब से पहले १९६० में सिरिमाओ भंडारनायके, १९५९ में अपने पति की हत्या के बाद, श्रीलंका की प्राधान मंत्री बनीं । वह दुनिया की पहली महिला प्रधान मंत्री थीं । उन्होंने अपने देश पर १७ वर्षों तक शासन किया और यह उनका सौभाग्य था कि भारत में भी कुछ समय बाद महिला प्रधान मंत्री ही आ गयीं ।

१९६६ में लालबहादुर शास्त्री का अचानक निधन हो गया । उस समय इंदिरा गांधी उनके मंत्रिमंडल की सदस्या थीं । लेकिन जब लोक सभा में सत्तारूढ़ कांग्रेस दल ने उन्हें अपना नेता चुना लिया तो वह प्रधान मंत्री बन गयीं । दो बार वह प्रधान मंत्री बनीं, पर १९७७ में उनके दल को आम चुनाव में हार खानी पड़ी । लेकिन दो वीर्षों के भीतर ही वह फिर सत्ता में आ गयीं और अपने आखिरी दम तक, यानी १९८४ में जब तक एक हत्यारे ने उनका वध नहीं कर दिया, वह एकछत्र नेता बनी रहीं ।

इंदिरा गांधी के शासन काल में ही भारत ने पूर्वी पाकिस्तान को मुक्त होने में मदद दी और उसका स्वतंत्र बंगला देश के रूप में जन्म हुआ । विभाजित पाकिस्तान में पहले ज़ुल्फिक़ार अली भुट्टो वहां के प्रधान मंत्री बने, और जब याह्या खां को अपमानित होकर राष्ट्रपति का पद छोड़कर देश से बाहर जाना पड़ा तो वह राष्ट्रपति के पद पर सुशोभित हुए । लेकिन अगले पांच वर्षों में ही उन्हें उठा फेंका गया और फिर मुकद्दमे के बाद उन्हें फांसी दे दी गयी । उनकी बेटी, बेनज़ीर भुट्टो ने तुरंत अपने लिए राजनीतिक जीवन चुना, और १९८५ में बेनज़ीर की पाकिस्तान पीपलस पार्टी को आम चुनाव में बहुमत मिला और वह प्रधान

मंत्री बन गयीं । किंतु १९९० के चुनाव में पाकिस्तान पीपल्स पार्टी को हार का सामना करना पड़ा ।

बंगलादेश के पहले प्रधान मंत्री शेख मुजीबुर्रहान १९७५ में राष्ट्रपति बन गये, लेकिन छः महीने के भीतर ही उनकी हत्या कर दी गयी । उसके बाद तो रह-रह कर वहां राज्यक्रांति में जनरल एर्शाद वहां के राष्ट्रपति बन बैठे और उन्होंने आठ वर्षों तक चुनाव नहीं होने दिये । जब जनता ने बहुत शोर मचाया तो १९९० में उन्होंने इस्तीफा दे दिया । परिणामस्वरूप चुनाव हुए और बेगम खालिदा ज़िया के नेतृत्व में बंगलादेश राष्ट्रीय पार्टी सब से बड़े दल के रूप में सामने आयी । ५ अप्रैल को वहां की संसद, जातीय संसद, की बैठक हुई और बेगम खालिदा ज़िया ने प्रधान मंत्री का पद संभाल लिया ।

उधर एक और पड़ोसी देश बर्मा में भी जिसे अब माईनमार कहते हैं, वहां के एक समय लोकप्रिय नेता आंग सान की भारत में शिक्षा-प्राप्त पुत्री, एक प्रकार से अपनी बारी का इंतज़ार कर रही है, क्योंकि उसके दल को पिछले वर्ष लंबे अर्से के बाद हुए चुनाव में विजय प्राप्त हुई थी । लेकिन वहां के राष्ट्रपति ने अभी उसे हरी झंडी दिखानी है ताकि वह आगे बढ़े और अपनी लोकतांत्रिक सरकार का गठन करे ।
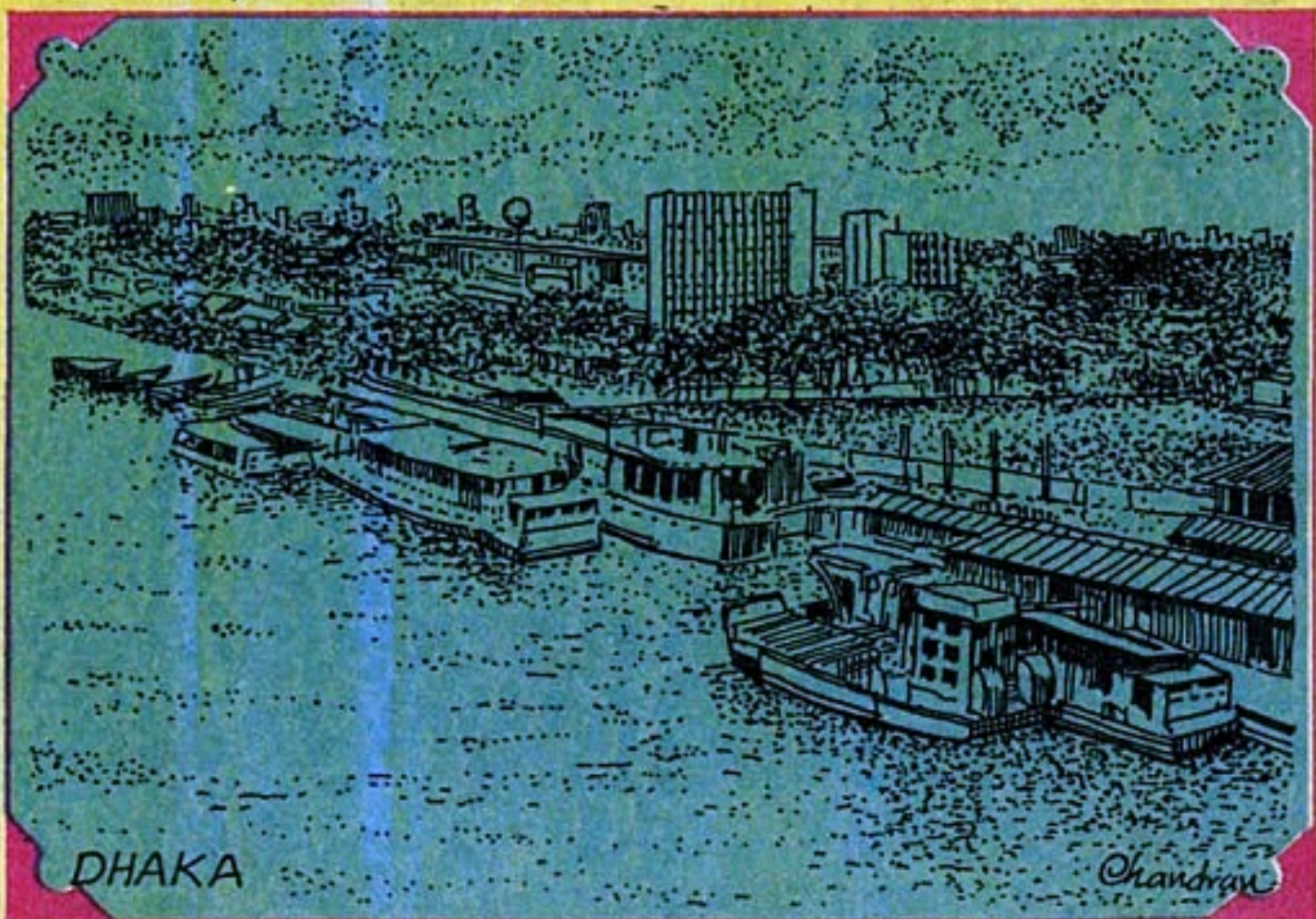
सहृदय न्यायाधीश

पुराने वक्तों में सहारनपुर में भीमसिंह नाम का एक सूदखोर रहता था। सोहन ने उससे एक हज़ार मोहरें कर्ज़ ली थीं। वह जब उसे कर्ज़ लौटाने गया तो भीमसिंह बोला, "तुम्हें मूल चुकाने की जरूरत नहीं, सिर्फ सूद चुका दिया करो।"

भीमसिंह की बात सुनकर सोहन असमंजस में पड़ गया। वह डेढ़ हज़ार मोहरें देकर सूदसमेत सारा कर्ज़ चुका देना चाहता था, इसलिए सोहन ने अपने को संजोते हुए कहा, "मैं तो मूल और सूद समेत सारा कर्ज़ अभी चुकता कर देना चाहता हूं।"

भीमसिंह बोला, "हमारा जो इकरारनामा हुआ था, उस में सिर्फ सालाना सूद चुकाने की बात लिखी थी, मूल लौटाने की बात नहीं।"

पर सोहन अपनी बात पर अटल था। इसलिए भीमसिंह और सोहन न्यायाधीश के पास गये।

न्यायाधीश ने सब-कुछ तोलते हुए कहा, "इकरारनामे में तो वही लिखा है जो भीमसिंह कह रहा है। मूल चुकाने की बात तो कहीं है ही नहीं। तुम पांच सौ मोहरें सालाना सूद भीमसिंह को फौरन दे दो।"

सोहन अब लाचार था। उस लाचारी में उसने उसे पांच सौ मोहरें तो दे दीं, पर वह न्यायाधीश की अदालत से हटा नहीं, वहीं बैठकर रोता रहा। भीमसिंह अपनी रकम लेकर वहां से चलता बना था। अब न्यायाधीश ने सोहन को संत्वना देते हुए कहा, "मैं जानता हूं भीमसिंह धोखेबाज़ है। पर ऐसे लोगों से लेन-देन करते समय तुम्हें बहुत सावधानी बरतनी चाहिए थी। खैर, जो हुआ सो हुआ, उसे भूल जाओ। भीमसिंह से बचने की मैं तुम्हें एक तरकीब बताऊंगा।"

सोहन ने रोते हुए न्यायाधीश के पांव

कीर्ति अग्रवाल

पकड़ लिये ।

"ठीक है । अभी से तुम अपना नाम सोहन से सावन रख लो । मैं तुम्हें एक शपथ-पत्र दूंगा जिसमें यह लिखा होगा कि तुमने अपना नाम अब सावन रख लिया है । भीमसिंह को ब्याज मिलना था सोहन से, सावन से नहीं । इस तरह तुम इस मुसीबत से बच सकोगे," न्यायाधीश बोला ।

सोहन ने वह शपथ-पत्र अपने पास रख लिया और अपने गांव को लौट गया । एक वर्ष ऐसे ही बीत गया । तब भीमसिंह उसके यहां सूद की रकम वसूल करने गया ।सोहन का एकटूक जवाब था, "यह देनदारी सोहन की थी । उसी से पूछो । मैं तो सावन हूं," और उसने न्यायाधीश द्वारा सत्यापित शपथ-पत्र भीमसिंह के सामने रख दिया ।

भीमसिंह समझ गया कि यह सूझ-बूझ सोहन की नहीं, न्यायाधीश की है । पर पैसा तो उसे वसूलना ही था । इसलिए बिना उससे कुछ कहे वह वहां से चला गया ।

इसके कुछ दिनों बाद ही सोहन का पता पूछते-पूछते एक अमीर व्यक्ति सोहन के घर आया और उससे बोला, "यहां कोई सोहन नाम का आदमी रहता है? मुझे उसे एक लाख मोहरें देनी हैं । दरअसल, सोहन के पिता ने मेरे पिता की किसी विपत्ति में जान बचायी थी, और उसी के एवज़ में मेरे पिता ने ये मोहरें देने की इच्छा प्रकट की थी । लेकिन अब तक हम लोग कुछ तंगी में रहे । इसलिए पैसे का इंतज़ाम न हो सका । अब हमारी हालत सुधरी है और हम वह दायित्व पूरा करना चाहते हैं ।"

ऐसी अप्रत्याशित सूचना पाकर सोहन गद्गद हो गया, बोला, "मैं ही सोहन हूं!"

"मैं कैसे यकीन करूं कि तुम ही सोहन हो?" वह अमीर व्यक्ति बोला, "इस गांव का यदि कोई बड़ा आदमी कह दे कि तुम ही सोहन हो तो मैं यकीन कर लूंगा ।"

उस गांव में सब से बड़ा आदमी तो वही भीमसिंह ही था । सोहन और आगंतुक, दोनों सीधे भीमसिंह के पास गये ।

भीमसिंह तो इसी मौके की ताक में था । बोला, "मैं यह कहने को तैयार हूं कि तुम ही सोहन हो । पर तब तुम्हें अपने सभी पुराने कर्ज चुकाने होंगे!"

सोहन अब फिर असमंजस में पड़ गया । यदि वह भीमसिंह की बात नहीं मानता तो उसे एक लाख मोहरें अपने हाथ से गंवा देनी होंगी, और यदि मानता है तो भीमसिंह का चक्कर फिर शुरू हो जाता है । हां, पर एक लाख मोहरें मिल जाने पर पांच सौ मोहरें देना कौन-सा मुश्किल होगा? यही सब सोचकर सोहन ने भीमसिंह को 'हां' कह दी; उसने यह बिलकुल भी न सोचा कि यह उसके लिए जाल बिछाया गया है । इसके साथ-साथ उसने भीमसिंह के साथ एक नये इक़रारनामे पर दस्तखत कर दिये ।

जैसे ही उस इकरारनामे पर सोहन ने दस्तखत किये, वैसे ही वह अमीर व्यक्ति अपनी बात से मुकर गया । सोहन की हालत वही पहले जैसी थी । ऊपर से भीमसिंह का तकाज़ा अलग शुरू हो गया ।

लाचार होकर सोहन फिर न्यायाधीश के पास पहुंचा और विनय-याचना के साथ उसे सारी बात बता दी । इस पर न्यायाधीश झुंझला गया और उसी झुंझलाहट में बोला, "एक बार धोखा खाकर तुम्हें अक्ल नहीं आयी? अब फिर ओखली में सर दे दिया! भीमसिंह तो पक्का सूदखोर है । यह सब तुम्हें पहले सोच लेना चाहिए था । और यह तुमने कैसे विश्वास कर लिया कि अचानक कोई तुम्हें एक लाख मोहरें दे देगा!" यह सब कहते हुए न्यायाधीश ने उसे डांटा ।

"हुज़ूर, आइंदा मुझ से ऐसी गलती नहीं होगी," सोहन न्यायाधीश के सामने गिड़गिड़ाने लगा, "एक बार आप मेरी रक्षा और करें ।"

न्यायाधीश ने तुरंत भीमसिंह को बुलवा भेजा । भीमसिंह जब न्यायालय में पहुंचा तो न्यायाधीश बोला, "यह सोहन तुम्हारा सूद नहीं चुका रहा न?"

"हां, हुज़ूर, यही बात है!" भीमसिंह फरियाद करता हुआ सा बोला ।

"तो ठीक है, मैं उसे अभी कारावास में डाले दे रहा हूं । जब तक कोई दूसरा व्यक्ति इसकी ज़मानत नहीं देगा, मैं इसे यहीं बंद रखूंगा ।" न्यायाधीश बोला । भीमसिंह खुशी-खुशी सोहन के घर पहुंचा और वहां जाकर बोला, "सोहन जेल में बंद है । वह तमाम उम्र वहीं सड़ता रहेगा । इसलिए

अभी एक हफ्ता भी नहीं बीता था कि सोहन जेल से रिहा हो कर आ गया । हुआ यों कि वहां के राजा के मुद्दत बाद एक बेटा हुआ था । बेटे की राजा और रानी को बड़ी लालसा थी । इसलिए इसी खुशी में उन्होंने सभी छोटे अपराध वाले कैदियों की सज़ा माफ कर दी और उन्हें रिहा कर दिया गया ।

सोहन के रिहा होने की खबर पाकर भीमसिंह फौरन उसे मिला और बोला, "तुम जेल से छूट गये हो । मुझे बहुत खुशी हुई है । अब तुम फौरन मेरा सूद अदा करो ।"

सोहन के पास उत्तर तैयार था । बोला, "तुम्हारा सूद नहीं चुकाया, इसीलिए तो मुझे जेल हुई थी । अब तुम्हें सूद किस बात का दूं?"

भीमसिंह गुस्से से जलभुन गया । वह दौड़ा-दौड़ा न्यायाधीश के पास पहुंचा । पर न्यायाधीश ने सोहन की बात की ताईद की ।

अब भीमसिंह किसी और मौके की ताक में था । इस बार उसने किसी भलेमानुस से दिखनेवाले व्यक्ति को सोहन के पास भेजा । उसके हाथ में एक पत्र था । उसमें लिखा था कि सोहन उसे जानता है और वह एक विश्वसनीय व्यक्ति है और उसे नौकरी दी जा सकती है ।

"मैं तो आपकी केवल दया चाहता हूं," वह व्यक्ति बोला । "मैं एक लंबे अर्से से बेकार हूं । न्यायाधीश आप पर मेहरबान है । आप इस पर दस्तखत कर देंगे तो वह मुझे नौकरी दिलवा देगा ।"

बेहतर होगा कि तुम लोग अपनी ज़मीन-जायदाद बेचकर मेरे सूद की रकम चुकाने-संबंधी इस इकरारतामे पर दस्तखत कर दो ।"

इस बीच सोहन की पत्नी को न्यायाधीश की ओर से सारी जानकारी मिल गयी थी, इसलिए वह भीमसिंह की बात सुनकर रत्ती भर भी परेशान नहीं हुई । उलटे बोली, "वह घर में रहे या जेल में, हमें इससे क्या अंतर पड़ता है! हम तो उसके इन कर्ज़ों से तंग आ चुके हैं । हमारे भाग्य में जो है, वही तो हमें मिलेगा न! इसलिए पड़ा रहने दो उसे जेल में ही ।"

उधर भीमसिंह ने सोचा, चलो देखते हैं इस तरह कितने दिन काटते हैं ये लोग । लेकिन

सोहन ने सोचा एक ज़रूरतमंद की मदद करने में क्या हर्ज़ है। इसलिए उसने उस कागज़ पर अपने हस्ताक्षर कर दिये।

वह व्यक्ति उस काग़ज़ के साथ सीधे भीमसिंह के यहां पहुंचा। लेकिन जब तक वह भीमसिंह के यहां पहुंचा, तब तक उस पर लिखी इबारत ग़ायब हो चुकी थी, और सिर्फ सोहन के हस्ताक्षर ही रह गये थे। यानी, सोहन के साथ यह फिर धोखा हुआ था।

बहरहाल, सोहन के हस्ताक्षर वाले काग़ज़ पर भीमसिंह ने लिखाया कि सोहन ने उससे दस हज़ार मोहरों का कर्ज़ लिया था और इसके एवज़ में एक हज़ार मोहरें हर साल देने का वायदा किया था।

उस काग़ज़ के साथ वह फिर न्यायाधीश के सामने हाज़िर हुआ। न्यायाधीश ने वह काग़ज़ देखा और हैरान रह गया। पर वह बोला कुछ नहीं। उसने भीमसिंह से केवल इतना ही कहा कि वह शीघ्र ही उसे सूचित करेगा, और यह कहकर उसने उसे वापस भेज दिया। फिर उसने सोहन को बुलवाया और उससे कहा, "क्या अभी तक तुम्हें अक्ल नहीं आयी? ऐसा तुमने क्यों किया?"

सोहन ने सारी बात विस्तार से कह सुनायी। न्यायाधीश समझ गया कि भीमसिंह ने जादुई स्याही इस्तेमाल की है और सोहन को फिर फंदे में फांस लिया है। इसीलिए झल्लाकर बोला, "मूर्ख, तुम इन धोखेबाज़ों से बच नहीं सकते? वे दिन-ब-दिन होशियार होते जा रहे हैं। पर तुम हो कि उनसे धोखे-पे-धोखा खाये जा रहे हो! तुम्हें बचाना अब मेरे बस का नहीं रहा!"
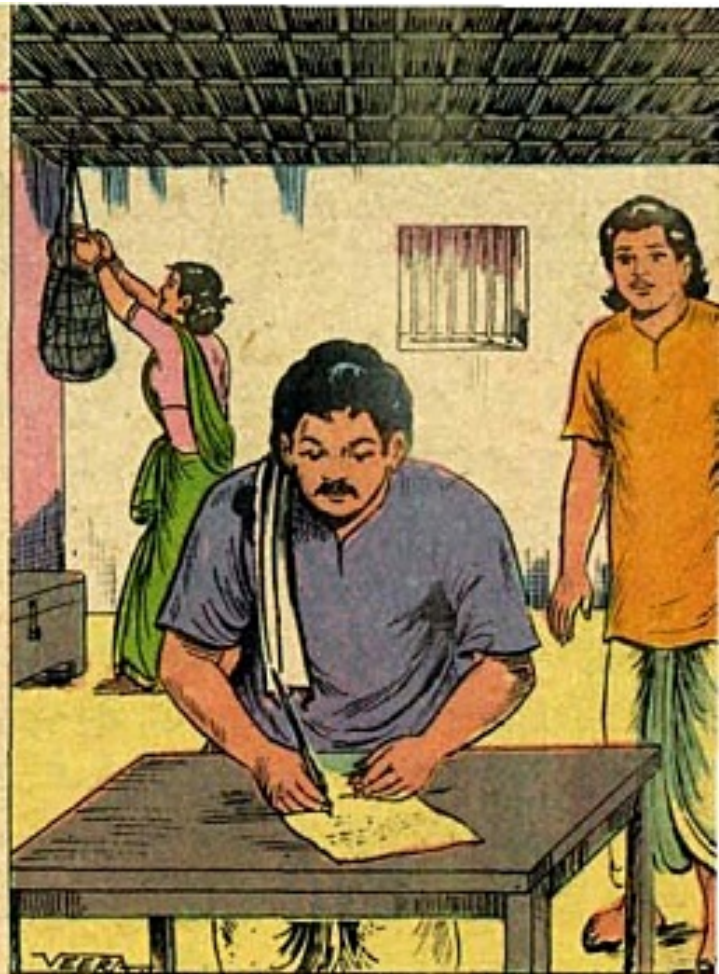
सोहन पहले तो हतबुद्धि-सा खड़ा रहा, फिर बोला, "हुज़ूर मुझ जैसे अबोध और लाचार व्यक्तियों को बचाने के लिए ही तो आप जैसे अधिकारियों की नियुक्ति हुई है।"

इस पर न्यायाधीश को गुस्सा आ गया। बोला, "एक बार बचा पाया, दो बार बचाया। कितनी बार तुम्हें बचाऊं? एक बार भी जब कोई धोखा खाता है तो काफी संभल जाता है और वह धोखा देने वाले से भी ज़्यादा होशियार हो जाता है। अब तुम भुगतो अपनी बेवकूफी का फल!"

सोहन में भी जैसे कि तर्क-बुद्धि आ गयी थी। बोला, "ठीक है, आप मुझे मत बचाइए।

मुझ जैसे अबोधों को बचाना ही आपका काम नहीं, पर अपराधियों को काबू में रखना तो आपका फ़र्ज़ बनता है न!"

"दोनों में अंतर क्या है?" न्यायाधीश के तेवर चढ़े हुए थे ।

"बहुत अंतर है," सोहन बोला, "मुझ जैसे अबोध लोग बार-बार धोखा खा जायें तो वह गलती उनकी मानी जाती है, पर यदि आप अपराधियों को काबू में रख सकें तो धोखा खाने की नौबत ही न आये । इधर मेरे-जैसे लोग इन अपराधियों से बचने के लिए एक तरकीब सोचते हैं, उधर वे दूसरी भिड़ा देते हैं । अच्छा तो यह है कि ये अपराधी रहें ही नहीं! क्या उन पर आप काबू नहीं पा सकते? क्या उन्हें हमेशा के लिए रोक नहीं सकते? न्यायाधीश होकर जो काम आप नहीं कर सकते, वह मुझ जैसे लोगों से कैसे संभव है?"

सोहन का तर्क ऐसा था कि न्यायाधीश को आगे कुछ सूझा ही नहीं । उसे अपनी गलती का एहसास हुआ । इसलिए उसने दूसरे ही दिन घोषणा करवा दी कि कर्ज़ देने वाले कर्ज़ लेने वालों से अपने मनचाहे ढ़ंग से इकरारनामा नहीं कर सकते । केवल वही इकरारनामा वैध माना जायेगा जिस पर न्यायाधीश के सामने हस्ताक्षर होंगे ।

चार दिन बीत जाने के बाद भीमसिंह फिर न्यायाधीश के पास आया । वह सोहन के बारे में पूछताछ कर रहा थां । न्यायाधीश ने फौरन अपनी आंखें तरेरीं और बोला, "सब जानते हैं कि सोहन की कितनी बिसात है, वह कर्ज़ लेकर उतार सकता है कि नहीं । ऐसी अवस्था में उसे दस हज़ार का कर्ज़ देना, और वह भी बिना किसी साक्षी के, कहां की अक्लमंदी थी? और यदि तुम ने फिर भी कर्ज़ दिया है तो ज़रूर इसके पीछे कोई चाल रही होगी, क्योंकि सब जानते हैं, कि तुम बेअक्ल नहीं हो । अब तुम यहां से फौरन चलते बनो, नहीं तो धोखेधड़ी में तुम्हें जेल में डाल दूंगा ।"

न्यायाधीश की बात सुनकर भीमसिंह फौरन वहां से भाग खड़ा हुआ । अब सोहन के पास जाकर फिर तकाज़ा करने की उसकी हिम्मत न थी ।

अपूर्व के पराक्रम

४

(पूर्व कथा: अपूर्व का जन्म हिमालय की कंदरा में रहने वाले योगी सदानंद की यज्ञाग्नि में हुआ था । था तो वह एक नन्हा-सा मानव, पर क्षमताएं उसकी अद्‌भुत और अलौकिक थीं । वह एक देवदूत समान था, बिलकुल निष्कपट । पहले उसने कुछ गांववालों को एक संकट से बचाया और फिर समीर नाम के एक ग्रामीण बालक को डाकुओं के चंगुल से मुक्त किया । राजा ने डाकुओं के लिए मौत की सज़ा सुना दी थी । पर वह उन्हें छोड़ सकता था, बशर्तेकि कोई चमत्कार देखने को मिले । —अब आगे पढ़िए ।)

जिस अंधेरी कोठरी में डाकुओं को रखा गया था, वहां मुर्दनी छायी हुई थी । फिर उन में से एक डाकू को कहते हुए सुना गया, "तुम समझते हो कि राजा हमारी जान बख्श देगा?" प्रश्न करने के साथ-साथ वह सुबक-सुबक कर रो रहा था ।

"यह संभव हो सकता है, अगर ईश्वर हम पर मेहरबान हो तो!" दूसरे डाकू ने उत्तर दिया ।

"यों बुज़दिलों की तरह झींक क्यों रहे हो!" भैरव सरदार कड़ककर बोला ।

"और तुम यह इस तरह चिल्लाकर किस्से सुना रहे हो?" दो-तीन डाकुओं ने एकसाथ ही भैरव को डपटा । "हम तमाम उम्र बुज़दिल नहीं थे तो और क्या थे? अपनी राह पर सीधे जा रहे यात्रियों पर हम झपट पड़ते थे, घरों के घर तबाह कर देते थे जबकि हमारे मुकाबले पर कोई नहीं होता था; लोगों में ख़ौफ पैदा करते थे । यह सब बुज़दिली नहीं तो और क्या थी? भैरव सरदार, तुमने

बुज़दिली के अलावा हमें और कुछ नहीं सिखाया, और अब तुम ही हम पर बुज़दिली का इल्ज़ाम लगाते हो? तुम्हारी हिम्मत कैसे हुई ऐसी बात कहने की!"

भैरव को जैसे कि काठ मार गया।

लेकिन जो मोहक स्वर उन्होंने पहले सुना था, वह उन्हें फिर सुन पड़ा, "दोस्तो, तुम लोग तो ऐसे बतिया रहे हो जैसे कि तुम नादान बच्चे हो! अपने आप को धोखा मत दो। तुम लोग भैरव के साथ अपनी पूरी रज़ामंदी से रहे और तुम्हें हमेशा पता था कि तुम क्या करने जा रहे हो? यही कारण है तुम सब को सजा मिलनी चाहिए। वह बात साफ है न?"

अब बाकी डाकुओं को भी काठ मार गया था। कुछ देर की चुप्पी के बाद भैरव बोला, "ऐ देवदूत, क्या तुम हमारी रक्षा करोगे? मुझे चौकीदारों ने बताया है कि हमारे फांसी के दिन की पहले ही घोषणा हो चुकी है!"

"मैं कुछ नहीं कह सकता, सिवाय इसके कि तुम ईश्वर से उसकी दया की भीख मांगो," अपूर्व ने उन्हें सुझाव दिया।

* * *

लेकिन वहां के लोगों में अपार खुशी थी। ऐसे ज़ालिम डाकुओं के पकड़े जाने की खबर पाकर उन्होंने बड़ी राहत की सांस ली थी। उनकी फांसी का दिन तय हो चुका था। फांसी सुबह-सुबह ही दी जानी थी, शहर के बाहर उसी जगह जहां पहले दी जाती थी। यह एक मिट्टी का टीला था जहां फांसी का मचान तैयार किया गया। फंदा ऊपर मचान के एक मज़बूत डंडे से लटक रहा था।

अभी सूरज निकला भी नहीं था कि लोग टीले के सामने जुटने शुरू हो गये थे। फिर, जिस रास्ते से डाकुओं को बंदीगृह से फांसी के टीले तक लाना था, वहां भी लोग, सैकड़ों की तादाद में, पंक्ति बांधे खड़े थे।

सूरज जैसे ही निकला, वैसे ही डाकुओं को ज़ंजीरों से जकड़कर शहर की गलियों में से घुमाते हुए लाया गया। उनके आगे-आगे तथा बगल में सैनिक ही सैनिक थे। एक तरह से पूरा जुलूस ही निकल रहा था और इस जुलूस के आगे-आगे राजा का कोतवाल अपने घोड़े पर चल रहा था। घोड़ा धीरे-धीरे दुलकी चाल से चल रहा था।

ज़बरदस्त जमघट था। उस जमघट में से

कुछ लोग तो डाकुओं को हैरत-भरे ढंग से देख रहे थे, कुछ उन्हें बुरी तरह कोस रहे थे। कहने की ज़रूरत नहीं कि इन डाकुओं के हाथों उन्होंने बहुत कष्ट उठाये थे।

"अरे दुष्टो! अरे शैतानो!" एक औरत उस जमघट में से चिल्लाती हुई आगे आयी और उसने भैरव के मुंह पर थूक दिया। फिर वह उसी तरह चिल्लाती हुई कहती गयी, "इस ज़ालिम ने और इसके इन आदमियों ने मेरे घरवाले को रास्ते में रोककर उससे उसकी रुपयों की थैली छीननी चाही। वह अपने साथियों के साथ कहीं दूर से लौट रहा था। लेकिन उसने अपनी लाठी चलाकर इन में से कइयों के हाथ-पांव तोड़े। जब वह इनका मुकाबला करता रहा, तब तक उसके साथियों को वहाँ से निकल भागने का मौका मिल गया। और इस बुज़दिल भैरव ने क्या किया? जब उसकी लाठी के सामने इसकी कोई पेश न गयी तो इसने पीछे हटकर उस पर तीर बरसाने शुरू कर दिये। काफी देर तक तो वे तीर भी उस ढाल से टकराकर चूर-चूर होते रहे या वापस होते रहे, पर आखिर जब वह पूरी तरह थक गया और उसकी लाठी की रफ्तार धीमी पड़ने लगी तो इस कमीने ने अपने तीरों से उसकी छाती छलनी कर दी, और जब वह दम तोड़ते हुए नीचे गिर पड़ा तो इस बेशर्म ने उसके मुर्दा शरीर से वह थैली चुरा ली।"

"डूब मरो! डूब मरो!" भीड़ में से लोग उसपर लानतें भेज रहे थे। कुछ तो आगे बढ़कर उसे वहीं धर दबोचना चाह रहे थे।

कोतवाल ने लोगों को जब इतना उतावला हुआ देखा तो उसने अपना घोड़ा मोड़ लिया और भीड़ की ओर देखते हुए अपने पूरे ज़ोर से बोला, "भाइयो और बहनो, मैं आप लोगों का गुस्सा समझता हूँ। मैं आप लोगों की बदले की भावना भी समझता हूँ। पर उन आदमियों से बदला लेना ठीक नहीं जो आखिरी बार आपके सामने से निकल रहे हैं और जिन्हें अब मौत के अलावा और कहीं नहीं पहुँचना। इसलिए सब्र से काम लो। ये उनके जीवन की अंतिम घड़ियां हैं। उन्हें शांत हो कर प्रार्थना करने का मौका दो।"

भीड़ अब शांत ही चुकी थी।

"माँ," भैरव ने अपने ज़ंजीरों में जकड़े

हाथों को ऊपर उठाते हुए आंसू-भरी आवाज़ में कहा, "माँ, मैं गुनाहगार हूँ । मैं पापी हूँ । मैंने कइयों को मौत के घाट उतारा । मैंने कइयों के पति, कइयों के बेटे, कइयों के पिता और कइयों के भाई इस दुनिया से उठा दिये । लेकिन चिंता मत करो । अभी कुछ ही देर बाद मैं दोज़ख की ओर बढ़ रहा होऊंगा । पर मुझे कई संसारों में से होकर जाना होगा । संभव है मेरी वहाँ उन सब की आत्माओं से भेंट हो जाये जिन्हें मैंने उस संसारों में धकेला था । हो सकता है परमेश्वर ने उन्हें छूट दे रखी हो कि मुझे जमकर यातनाएँ दें । उसके बाद मैं उस दोजख में ग़रक़ हो जाऊंगा और फिर यातनाएँ ही यातनाएँ भुगतता रहूँगा जब तक कि ईश्वर मुझे उन से नहीं उबारता ।"

"हम सब को ये यातनाएँ भोगनी ही चाहिए," उसके बाकी साथियों ने भी एक स्वर में कहा ।

"हमें कोड़े मारो, आप में से जिसका दिल चाहता है । मैं कोतवाल साहब से निवेदन करता हूँ कि वह आप लोगों को कोड़े मारने दें," उनमें से एक डाकू बोला ।

भीड़ में से उन लोगों ने ऐसा कुछ नहीं किया, बल्कि वह औरत जिसने भैरव पर थूका था, अब सिसकने लगी थी ।

"भैरव, तुम पश्चात्ताप कर रहे हो तो यह अच्छी बात है । काश कि मैं तुम लोगों के लिए क्षमादान की व्यवस्था कर सकता! लेकिन तुम लोग यह भी जानते हो कि तुमने इन लोगों के साथ ऐसा बरताव किया कि तुम किसी प्रकार की दया के हकदार नहीं हो । उस प्यारे बालक समीर ने, जिसका तुम वध करने पर उतारू थे, तुम्हारे जीवन के लिए भीख मांगी थी, पर राजा नहीं माने । बल्कि वह तो टस से मस नहीं हुए, अब बताओ क्या करें?" कोतवाल ने भैरव को संबोधित करते हुए कहा ।

"मैं जानता हूँ कुछ नहीं हो सकता! हमें तो अब मरना ही है । लेकिन क्या मेरे सथियों को क्षमादान नहीं मिल सकता? मैं सौ बार मौत की सज़ा भुगतने को तैयार हूँ । जितने भी अपराध हुए, उन सब के लिए ज़म्मेदार मैं हूँ, केवल मैं," भैरव सरदार ने सफाई देते हुए कहा ।

भैरव की बात सुनकर कोतवाल हंस

पड़ा। राजा के फैसले को कोई नहीं बदल सकता। अब नये सिरे से प्रार्थना करने के लिए देर भी बहुत हो चुकी है। नहीं, भैरव, मैं तुम्हें झूठी तसल्ली नहीं दे सकता। तुम सब को फांसी पर लटकना ही होगा," वह बोला।

चलते-चलते वह जुलूस फांसी वाले टीले तक पहुँच गया था। डाकुओं को वहाँ ऊपर ले जाया गया। वे बीस के करीब थे।

कोतवाल ने जल्लाद से पूछा, "सब तैयार है न?"

"बिलकुल, हुज़ूर," जल्लाद ने जवाब दिया।

"तो ठीक है, पहले फांसी इन के सरदार, भैरव को दो," कोतवाल ने हुक्म दिया।

"आपके हुक्म का पालन किया जायेगा," जल्लाद ने फिर जवाब दिया।

जल्लाद के सहायक ने भैरव को पकड़ा और उसे फांसी के तख्ते की ओर ले चला।

"भैरव, अब प्रार्थना करने का आखिरी मौका है। जो भी तुम्हारा इष्ट है, उसका स्मरण करो," कोतवाल ने आदेश के स्वर में कहा।

"मैं ईश्वर से क्षमा चाहता हूँ, और उन सब से भी जिन्हें मेरे कारण कष्ट उठाने पड़े," भैरव के मुंह से किसी तरह निकला।

जल्लाद ने भैरव को ठीक से खड़ा किया और फिर उसके गले में फंदा डाल दिया। टीले के नीचे जमी भीड़ एकदम स्तब्ध हो गयी थी। वह सांस रोके खड़ी थी।

"मैं दस तक गिनती करूंगा। जैसे ही मैं दस कहूँगा, तुम रस्सा खींचोगे। बात समझ में आयी?" कोतवाल ने जल्लदार से जानना चाहा।

"जी हाँ," जल्लाद ने उत्तर दिया।

कोतवाल ने गिनती शुरू कर दी। भीड़ में ज़बरदस्त तनाव था। वहाँ भय भी था और उत्तेजना भी। सूरज काफी चढ़ आया था जिससे उसकी रोशनी फांसी के तख्ते पर अच्छी तरह पड़ रही थी। फांसी वाला रस्सा काफी मज़बूत था। उस पर तेल पुता हुआ था ताकि काम करने में कहीं रुकावट न आये। सूरज़ की रोशनी में वह भी चमक रहा था।

"आठ!" कोतवाल ने पुकारा।

छोटा कोतवाल और उसके साथ दो और अधिकारी, जो कि टीले के नीचे खड़े थे, अब ऊपर आये । "तुमने रस्से की ठीक से जांच कर ली थी?" उन्होंने जल्लाद से जानना चाहा ।

"बहुत अच्छी तरह!" जल्लाद ने उत्तर दिया । वह अब पूरे होशोहवास में था ।

"फिर शुरू करो!" कोतवाल ने हुक्म दिया ।

रस्सा बदला गया । उसके बलों को वहाँ मौजूद हर अधिकारी ने अच्छी तरह जांचा और फिर उसे इस्तेमाल में लाया गया । कोतवाल ने फिर दस तक गिनना शुरू किया । जैसे ही उसने दस कहा, वैसे ही जल्लाद ने रस्सा खींचा । बड़ा कोतवाल और छोटा कोतवाल, दोनों उसके पास खड़े थे ।

देखते ही दखते रस्सा फिर टूट गया ।

कुछ देर के लिए तो मरघटी चुप्पी छायी रही । फिर कोतवाल बोला, "यह तो लगता है अलौकिक । मुझे फौरन राजा को खबर करनी चाहिए । तुम सब यहीं रुको । मैं अभी लौटता हूँ । इस बीच तुम लोग दूसरा रस्सा तैयार करो ।"

कोतवाल अपने घोड़े को सरपट दौड़ाता हुआ राजा के पास पहुँचा और फिर राजा को लिवाकर वापस आ गया । राजा के साथ और कई दरबारी भी थे ।

इस बार राजा ने रस्से की खुद जांच की । फिर उसका फंदा बनाया गया और फंदे को बक़ायदा भैरव के गले में डाला गया ।

जल्लाद के हाथों की पकड़ रस्से पर और मज़बूत हो गयी ।

"नौ!"

फांसी के तख्ते के पीछे गोलाई में खड़े डाकुओं में से कुछ बिलकुल टूट गये ।

"दस!"

जल्लाद ने झटके के साथ रस्से को खींचा । भैरव के शरीर को ऊपर जाना था, पर वह तो थोड़ा-सा झूल गया और देखते ही देखते रस्सा टूट गया ।

"यह क्या है?" कोतवाल चिल्ला उठा । जल्लाद की जैसे कि ज़बान खिंच गयी थी । ऐसी घटना तो कभी नहीं घटी । उसने कई लोगों को फांसी दी थी, पर यह तो अपनी तरह का ही अनुभव था ।

कोतवाल ने फिर गिनती शुरू की ।

"दस!"

रस्सा फिर टूट गया ।

इस बार भीड़ में से कुछ लोग अपने को रोक न पाये । उनके मुंह से कई तरह की बातें निकलीं जिनसे उनका आश्चर्य ही व्यक्त होता रहा था ।

"हूं!" राजा ने गंभीरता से कहा, "मैंने समीर से कहा था कि यदि ईश्वर इन बदमाशों की मदद करना चाहता है तो कोई चमत्कार होना चाहिए । वह चमत्कार हो गया है । बिना कारण यह रस्सा तीन बार कैसे टूट सकता है? इन अपराधियों को रिहा कर दो । मैं इनके सरदार और इन्हें क्षमा प्रदान करता हूँ। लेकिन इन्हें हमारी देख-रेख में नया जीवन जीना शुरू करना होगा ।"

भीड़ ने राजा के निर्णय का स्वागत किया । डाकुओं के हाथ-पांव से ज़ंजीरें खोल दी गयीं । वे सब राजा के पांव पर गिर पड़े ।

"तुम उस अदृश्य शक्ति के प्रति अपनी कृतज्ञता प्रकट करो जिसने तुम्हारी जान बचायी है । ईश्वर ने अनुकंपा दिखायी है तो उस पर खरे उतरो ।" राजा ने कहा ।

भीड़ ने राजा की जयजयकार की ।

*   *   *

"यह चमत्कार हुआ कैसे?" समीर ने अपूर्व से पूछा । वे उस समय जंगल के एकांत में थे ।

"तुम जानते ही हो । जब मैं तेज़ दैड़ता हूँ तो मैं अदृश्य हो जाता हूँ। जितनी बार कोतवाल ने गिनती गिननी शुरू की, मैं एक खास दूरी पर स्थिति संभाल लेता था । उधर वह दस कहता, इधर मैं इतनी तेज़ी से टीले पर से होता हुआ निकल जाता कि कोई मुझे देख भी न पाता । और जैसे ही मैं फांसी के तख्ते के पास होता, मैं अपनी तलवार से रस्से को काट देता । मेरी गति में तो कोई अंतर उगता नहीं था, इसलिए मैं बराबर अदृश्य रहता," अपूर्व ने उसे रस्से के टूटने का रहस्य समझाया । (जारी)

गुरुदक्षिणा

अपने धुन के पक्के राजा विक्रम फिर उस पेड़ के पास गये, पेड़ से लाश उतारी और उसे अपने कंधे पर डाले चुपचाप श्मशान की ओर चलने लगे। तब लाश में मौज़ूद बैताल बोला, "राजन्, मैं नहीं जानता कि आप किसी के प्रति बदले की भावना से इस तरह इतनी तकलीफें उठा रहे हैं या कि इसके पीछे कोई और कारण है। कुछ लोगों को बदला लेने का मौका मिलता भी है, पर वे अपयश के भय से या किसी और वजह से अपने लक्ष्य से चूक जाते हैं। उदाहरण के लिए मैं आपको यज्ञकर्म नाम के एक मुनि की कथा सुनाऊंगा। ध्यान से सुनिए ताकि आपका ध्यान बंटा रहे और आपको थकान भी महसूस न हो।" फिर बैताल इस प्रकार यज्ञकर्म की कहानी सुनाने लगा:

हिमगिरि राज्य पर वीरसेन का शासन था। उसका एकमात्र पुत्र था विजयवर्धन। वीरसेन चाहता था कि उसका पुत्र हर विद्या में

बैताल कथाएं
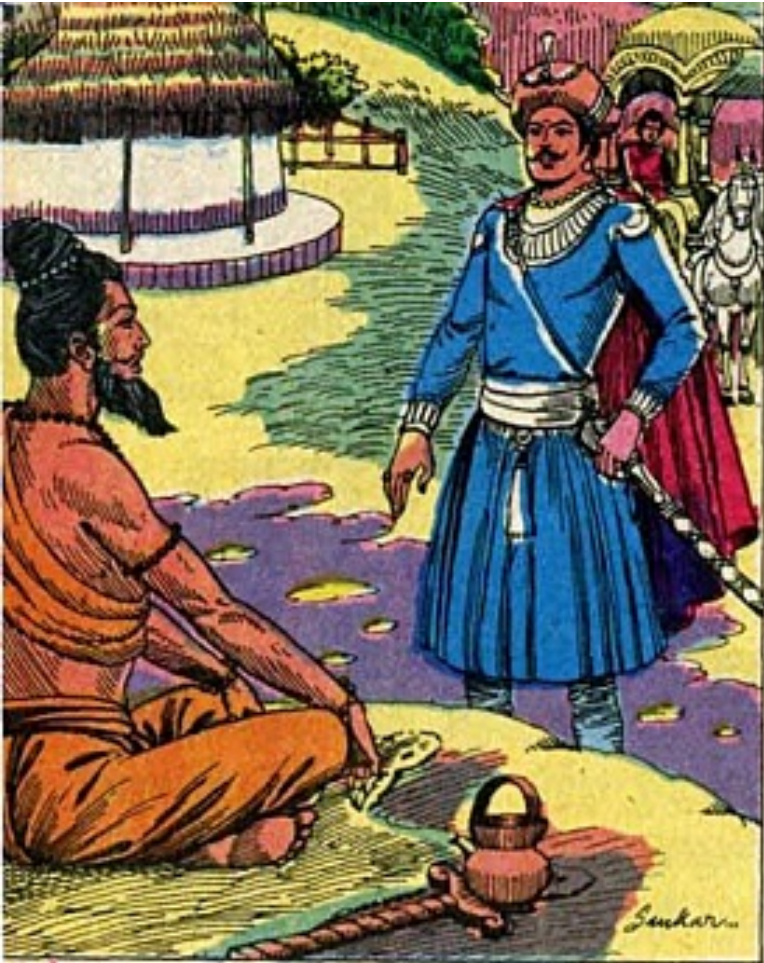
धुरंधर हो । उसे उसके लिए एक योग्य गुरु की तलाश थी । खोजते-खोजते पता चला कि शांतिवन में एक गुरुकुल है जिसे मुनि यज्ञकर्म चलाते हैं । यह भी पता चला कि वह मुनि बहुत बड़े तपस्वी हैं ।

एक दिन वीरसेन अपने पुत्र के साथ मुनि यज्ञकर्म के आश्रम में पहुंचा और उनसे बोला, "महात्मा, मैं इस भूखंड का राजा हूं । यह मेरा पुत्र विजयवर्धन है जो मेरे बाद यहां का राजा होगा । अपने इस पुत्र को हर विद्या में निपुण बनाने का सुअवसर मैं आपको दे रहा हूं । अब यह दायित्व आप पर रहा ।"

राजा वीरसेन की बात सुनकर मुनि बोले, "राजन्, मेरे यहां विद्या ग्रहण करने आने वाला राजा का पुत्र हो या किसी श्रमिक का, दोनों एक समान हैं । इसलिए आपके पुत्र को विद्या देना मेरे लिए कोई सुअवसर नहीं होगा, और फिर अभी तक मैंने आपके पुत्र को अपने शिष्य के रूप में ग्रहण भी नहीं किया!"

"मैं स्वयं आपके यहां चलकर आया हूं । इसीलिए मुझे विश्वास था कि आप मेरा प्रस्ताव अस्वीकार नहीं करेंगे ।" राजा वीरसेन ने उत्तर दिया ।

"सब का भला-बुरा देखने का दायित्व आपका है । लेकिन यह भी आपको शोभा नहीं देता कि आप इस तरह अहंकार से बात करें ।" मुनि यज्ञकर्म अपने को कहने से रोक न सके ।

मुनि यज्ञकर्म की भर्त्सना सुनकर राजा वीरसेन गुस्से से तमतमा गया । बोला, "मैं आप से वाद-विवाद करना नहीं चाहता, बस इतना बता दें कि आप मेरे पुत्र को अपना शिष्य बनाना स्वीकार कर रहे हैं या नहीं?"

मुनि यज्ञकर्म राजा की बात सुनकर कुछ सोच में पड़ गये । फिर बोले, "अपने पास आये इस चिरंजीवी का मुख देखकर मैं इसे विद्यादान करने से इनकार भी नहीं कर सकता ।"

मुनि यज्ञकर्म के उत्तर से राजा वीरसेन का अहं और आहत हुआ । फिर भी उसने अपने बेटे को मुनि के आश्रम में छोड़कर वहां से चला गया ।

उसी दिन से मुनि यज्ञकर्म ने विजवर्धन को विद्याबोध कराना शुरू कर दिया । गुरु की देख-रेख में राजकुमार विजयवर्धन जब

सोलह साल का हुआ, तब तक वह वेद-वेदांग और अन्य सभी शास्त्रों में पारंगत हो चुका था। तलवार चलाना, घोड़े की सवारी करना, गदायुद्ध और धुनर्विद्या में भी वह बहुत आगे पहुंच चुका था।

एक दिन मुनि ने अपने शिष्य को बुलाकर कहा, "पुत्र, आज से तुम्हारा विद्याभ्यास समाप्त हुआ। अब तुम अपनी राजधानी को लौट सकते हो। मैं चाहता हूं कि तुम्हारा राज्याभिषेक हो और तुम एक कुशल राजा बनो और खूब कीर्ति कमाओ। तुम्हारे साथ मेरा आशिस् हमेशा रहेगा।"

राजकुमार विजवर्धन ने अपने गुरु के पांव छुए और उन्हें आदरपूर्वक प्रणाम करते हुए बोला, "गुरुदेव, मैंने आपको गुरुदक्षिणा तो कुछ दी नहीं। आज्ञा कीजिए कि मैं आपको गुरुदक्षिणा में क्या दूं!"

शिष्य की बात पर गुरु को मंद हंसी आ गयी। बोले, "विजय, तुम्हारे जैसे योग्य शिष्य का गुरु बनना ही मेरी गुरुदक्षिणा है, मुझे और कुछ नहीं चाहिए।"

लेकिन विजयवर्धन ने फिर वही बात दुहरायी। उसने उस पर जोर देते हुए कहा, "इससे मुझे संतोष नहीं होगा, गुरुजी! आप ज़रूर कुछ-न-कुछ मांगें।"

शिष्य के मन को रखने के लिए गुरु ने कहा, "ठीक है, मैं गुरुदक्षिणा लूंगा। लेकिन अभी नहीं, जब इसका उपयुक्त समय होगा तब।"

राजाकुमार विजयवर्धन ने एक बार फिर

अपने गुरु की चरण-वंदना की और राजधानी के लिए चल पड़ा। राजधानी में पहुंचकर वह सीधा अपने पिता के पास गया और उसका नम्रपूर्वक अभिवादन किया।

पिता को जब पता चला कि उसका पुत्र हर विद्या में निपुण हो गया है तो उसे बहुत खुशी हुई। लेकिन साथ ही उसके मन में प्रतिकार की भावना भी जगी, क्योंकि जब वह मुनि यज्ञकर्म के आश्रम में पहली बार गया था तो मुनि ने उसे राजा के योग्य सम्मान नहीं दिया।

अगले दिन वीरसेन ने अपने कुछ सैनिकों को बुलाकर कहा कि वे यज्ञकर्म के आश्रम में जायें और उसे सूचित करें कि वह जब तक राजा की शरण में नहीं आता और अपने किये

की माफी नहीं मांगता, राजा उसे शांति से जीने नहीं देगा । इस पर भी यदि वह नहीं सुनता तो वे उसके आश्रम को आग लगा दें ।

सैनिक सीधे मुनि यज्ञकर्म के आश्रम में पहुंचे और वहां उन्होंने ठीक वही सब कहा जो राजा ने उन्हें बताया था । पर इससे मुनि यज्ञकर्म बिलकुल विचलित नहीं हुए । उलटे बोले, "धत्, उस अहंकारी से मैं क्षमा मांगूं? किस बात की?"

सैनिक को अब अगला कदम उठाना था । उन्होंने आश्रम में आग लगा दी, और इसकी खबर राजा तक पहुंचा दी ।

एक सप्ताह बीत गया । राजा वीरसेन ने सोचा, चलो अब खुद चलते हैं । अब तो मुनि क्षमा मांगेंगे ही ।

राजा वीरसेन मुनि यज्ञकर्म को देखने जब वन में पहुंचा, तो उन्हें उसने एक पेड़ के नीचे बैठा पाया । उसका अहंकार उसी तरह बना हुआ था । बोला, "क्यों, बड़े चले थे मेरा मुकाबला करने । अब भी अक्ल ठिकाने आयी कि नहीं? अब भी क्षमा मांग लो, मैं तुम्हें अपनी शरण में ले लूंगा । उठो, अपना हठ छोड़ो ।"

राजा की बात पर मुनि धीरे से मुस्करा दिये । फिर बोले, "राजन्, यह हठ नहीं, आत्मगौरव है । पर तुम परम दुरहंकारी हो । तुम्हें अहंकारवश इतना भी ज्ञान नहीं रहा कि तुम्हारे पुत्र का मैं गुरु हूं और मुझ से ही उसने विद्या ग्रहण की है ।"

राजा वीरसेन का क्रोध मुनि यज्ञकर्म की बात सुनकर और भड़क उठा । बोला, "तुम्हें पता नहीं, मैं अभी तुम्हारे प्राण ले सकता
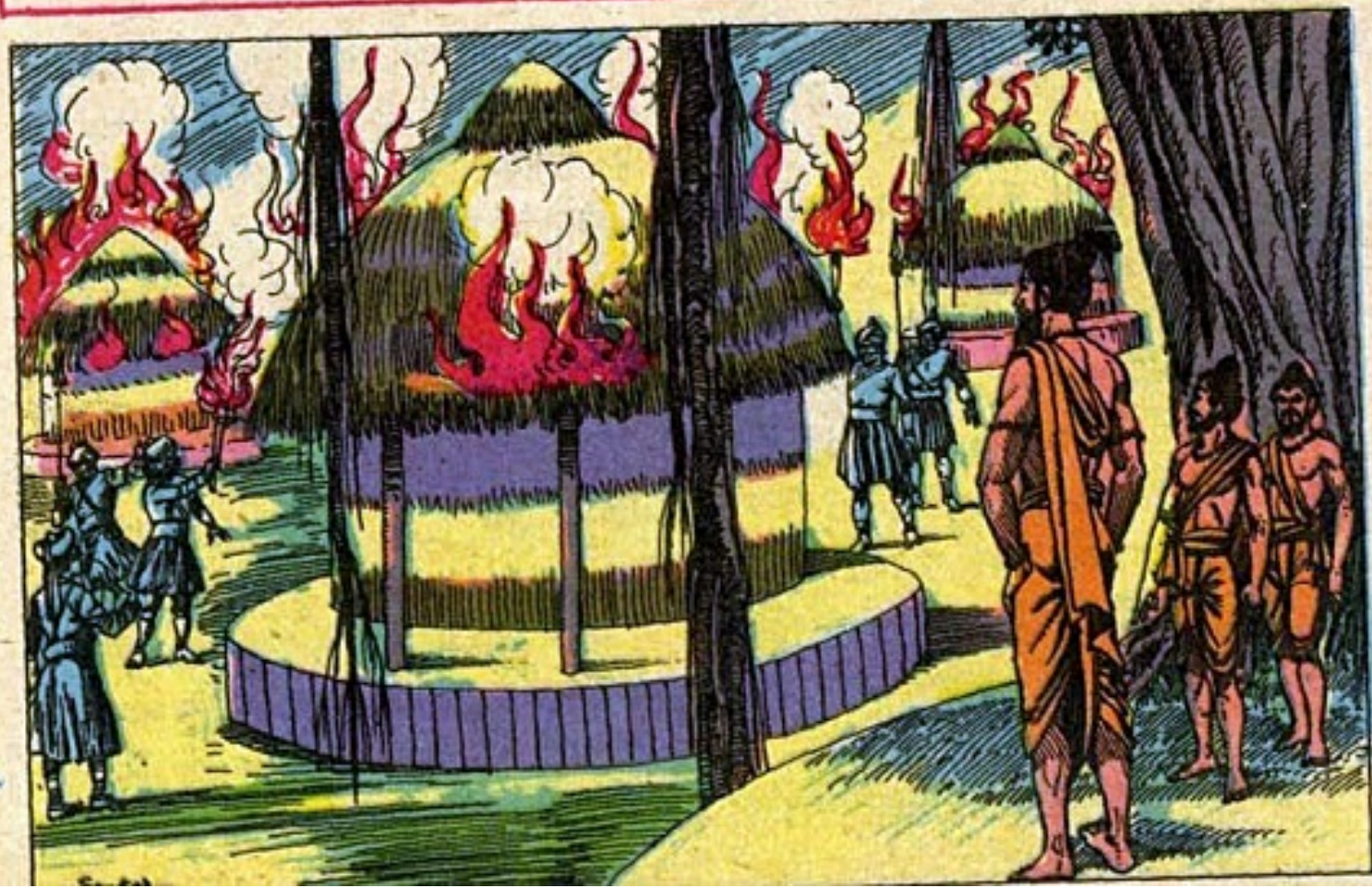
हूं।" और उसने तुरंत धनुष पर बाण चढ़ाकर उसे मुनि पर छोड़ा।

तुरंत मुनि यज्ञकर्म की आंखों से कुछ लपटें निकलीं जिन्होंने बाण को बीच रास्ते में ही भस्म कर दिया।

यह देखकर राजा भयभीत हो उठा। उसने तुरंत अपने घोड़े को मोड़ा और वहां से भाग लिया। इसके बाद उसने कभी जंगल का रुख नहीं किया।

कुछ महीने बीते। राजा वीरसेन ने राजकुमार विजयवर्धन का बड़ी भव्यता से राजतिलक करवाया। उसके दूसरे दिन ही राजकुमार अपने गुरु, मुनि यज्ञकर्म के दर्शन करने वन में गया। वहां, एक पेड़ के नीचे, उसे एक मुनि तप करते दीखे पड़े। पास में एक जले हुए आश्रम के केवल अवशेष ही मौजूद थे।

विजयवर्धन आगे बढ़ा। यह तो उसके गुरुदेव ही हैं! वह अचंभे में पड़ गया। उसने झुककर उनकी चरण-वंदना की। गुरुदेव ने अपनी आंखें खोलीं और बोले, "पुत्र, तुम कुशल तो हो न!"

"गुरुजी, मेरा राज्याभिषेक हो गया है। इस शुभ अवसर पर मैं आपका आशीर्वाद लेने आया। पर आपका जला हुआ आश्रम देखकर मेरा मन अशांत हो गया है। क्या यह किसी दुर्घटना का परिणाम है या कि इसके पीछे किसी की दुष्टता है?" राजकुमार विजयवर्धन ने विचलित भाव से पूछा।

"पुत्र, यह आश्रम किसी दुर्घटना का शिकार नहीं हुआ। एक उन्मादी के उन्माद का परिणाम है यह। उसने मेरे प्राण लेने की

भी कोशिश की ।" मुनि ने संक्षिप्त-सा उत्तर दिया ।

यह सुनते ही विजयवर्धन आवेश में आ गया, और उसी आवेश में बोला, "कौन है वह उन्मादी? वह चाहे कोई भी हो, मैं उसे छोड़ूंगा नहीं । मैं उसका सर उड़ाकर ही रहूंगा । तभी मेरे मन को शांति मिलेगी । यही मेरी प्रतिज्ञा है । कृपया मुझे बतायें कि वह उन्मादी है कौन! किसने ऐसा अत्याचार करने का साहस किया? मैं उसे क्षमा नहीं करूंगा ।"

शिष्य की प्रतिज्ञा सुनकर मुनि यज्ञकर्म घबरा गये । बोले, "ऐसा दुष्कर्म करने वाले के बारे में पूरी तरह जाने बिना तुम्हें ऐसी प्रतिज्ञा नहीं करनी चाहिए थी । उसका नाम सुनते ही, हो सकता है, तुम अपनी प्रतिज्ञा वापस ले लो ।"

विजयवर्धन के स्वर में उसकी दृढ़ता ज्यों की त्यों बनी रही । बोला, "आप यह कैसा सोच रहे हैं, गुरुदेव! मैं अपनी प्रतिज्ञा वापस ले लूंगा! मुझ पर ऐसा संदेह मत कीजिए और मुझे उस दुष्ट का नाम बताइए ।"

मुनि यज्ञकर्म थोड़े सोच में पड़ गये । फिर बोले, "वह कोई और नहीं, तुम्हारा अपना पिता वीरसेन ही है!"

यह सुनते ही विजयवर्धन चौंक उठा । फिर उसने प्रश्न किया, "आपके प्रति उसके मन में ऐसा द्वेष कैसे पैदा हुआ? आश्चर्य! मेरा पिता इतना क्रूर और अत्याचारी है! ठीक है, चाहे वह मेरा पिता ही है, मैं उसे क्षमा नहीं करूंगा ।"

मुनि यज्ञकर्म ने शुरू से आखिर तक राजकुमार विजयवर्धन को सारी बात बतायी ।

विजयवर्धन उसे ध्यान से सुनता रहा । फिर दुख के साथ बोला, "गुरुवर, मैं अभी अपने पिता को यहां, आपके चरणों में, लाऊंगा और यहीं उसका सर धड़ से अलग करूंगा ।"

"नहीं, नहीं, पुत्र, ऐसा नहीं करना," मुनि यज्ञकर्म ने राजकुमार विजयवर्धन को रोका, "तुमने एक बार मुझे गुरुदक्षिणा मांगने को कहा था! याद है न? मैंने कहा था कि उपयुक्त समय आने पर मैं स्वयं ही मांग लूंगा । अब वह समय आ गया है ।"

"आज्ञा कीजिए, गुरुवर!" विजयवर्धन ने नम्रतापूर्वक कहा, "मैं आपकी हर आज्ञा अपने माथे पर धारण करूंगा ।"

"अपने पिता को प्राण-दान दो, पुत्र!यही वह गुरुदक्षिणा है जो मैं तुम से चाहता हूं," मुनि यज्ञकर्म ने शांत स्वर में कहा ।

"ठीक है, गुरुवर, जैसी आपकी आज्ञा!" कहकर विजयवर्धन ने मुनि यज्ञकर्म के पांवों पर अपना सर नवाया और वहां से चल दिया ।

बैताल अपनी कहानी समाप्त कर चुका था । बोला, "राजन्, जिस वीरसेन ने मुनि यज्ञकर्म की जान लेने की कोशिश की और जिसे मुनि यज्ञकर्म अपनी तप:शक्ति से भस्म भी कर सकते थे, उसे उन्होंने ऐसे ही क्यों जाने दिया? क्या उन्हें अपयश का डर था? यदि वह चाहते तो राज्याभिषेक के बाद आशीर्वाद लेने आये विजयवर्धन के माध्यम से भी वीरसेन का अंत करवा सकते थे । लेकिन इस के लिए भी वह तैयार नहीं हुए । क्यों? ये प्रश्न सहज ही मन में उठते हैं । मुझे इनका उत्तर चाहिए । यदि आपने इनका उत्तर जानते हुए भी नहीं दिया तो आपका सर एकदम फट जायेगा ।"

बैताल के प्रश्न सुनकर राजा विक्रम बोले, "मुनि यज्ञकर्म यश-अपयश, उपकार-प्रतिकार, राग-द्वेष, इन सब से ऊपर उठ चुके थे । वह पूरी तरह परित्यागी थे । ऐसे महापुरुषों से जो शत्रुता करते हैं, वे मूर्ख और अज्ञानी होते हैं । ये महापुरुष किसी के प्रति बदले की भावना नहीं रखते । जो उन्हें हानि भी पहुंचाने की कोशिश करता है, उसे भी वे चेतावनी देकर छोड़ देते हैं । इसी कारण उन्होंने गुरुदक्षिणा लेने के बहाने अपने शिष्य को अपने पिता की हत्या करने से रोका । उनके व्यवहार में किसी के प्रति किसी प्रकार का ईर्ष्या-द्वेष नहीं था ।"

अब राजा विक्रम का मौन भंग हो चुका था । इसलिए बैताल तुरंत लाश के साथ अदृश्य हो गया और फिर उसी पेड़ से जा लटका । (कल्पित)

(आधार: एन.आर. शिवनागेश की रचना)

राजस

विजयपुरी पर राजा वीरवर्मा का शासन था । अपने पूर्वजों के प्रति तथा अपने वंश की प्रतिष्ठा के प्रति उसके मन में ग़ज़ब की आस्था और गौरव-भावना थी ।

एक दिन जब दरबार उठा और राजा तथा दरबारी विदूषक आपस में हलकी-फुलकी बातें करने लगे तो वहाँ राजकुमार कुमारवर्मा आ पहुँचा । कुमारवर्मा की उम्र अभी मुश्किल से ही दो साल थी ।

राजा ने तुरंत अपने बेटे को अपनी गोद में उठा लिया और उसे राजसिंहासन पर बैठाते हुए बोला, "पुत्र, हमारे विदूषक को बता दो कि हमारा राजस कैसा होता है?"

जैसे कि कुमारवर्मा ने अपने पिता की बात समझ ली हो, वह पाँव पर पाँव रखकर, बड़े आराम से सिंहासन की पीठ का सहारा लेकर बैठ गया । राजा की खुशी का ठिकाना न था । झट विदूषक से बोला, "देख लिया न! इसे कहते हैं राजस!" अब उसने अपने बेटे को फिर से गोद में ले लिया और उसे खूब प्यार किया और साथ में यह भी कहा, "शाबाश बेटे, तुमने तो आज अपने कुल की शान रख ली!"

विदूषक तो पास खड़ा, यह सब देख-सुन ही रहा था । वह भला पीछे कैसे रह सकता था । बोला, "ठीक कह रहे हैं प्रभु आप! क्या यह उम्र और क्या यह राजसी अंदाज़! गज़ब है, गज़ब!"

विदूषक की टिप्पणी से राजा बहुत खुश हुआ । उसने फौरन अपने गले से एक रत्नमाला उतारी और विदूषक के हवाले कर दी, और विदूषक ने उसे कृतज्ञतापूर्वक स्वीकार कर लिया ।

अब राजकुमार अपने पिता की गोद से उतरकर वहीं खेलने लगा । विदूषक ने मौका हाथ से जाने न दिया । फौरन बोला, "युवराज, एक बार फिर अपना राजस दिखाओ न!"

लेकिन राजकुमार पर विदूषक की बात का कोई असर नहीं हुआ । वह पहले की तरह ही खेलता रहा । राजा को बड़ी परेशानी हुई । उसी परेशानी में ही उसकी भौंवें भी चढ़ गयीं ।

विदूषक फिर पीछे रहने वाला कहाँ था । हंसकर बोला, "महाराज, राजकुमार ने फिर अपने राजस का परिचय दिया है । उसने केवल अपने पिता की आज्ञा का ही पालन किया और किसी की नहीं ।"

विदूषक की बात पर राजा गद्गद हो गया और उसने उसे एक और रत्नमाला भेंट में दे दी ।

—शारदा अग्रवाल

चन्दामामा परिशिष्ट – ३२

उनके सपनों का भारत

इसका हल बंटवारा नहीं था

भारत के इतिहास के एक बड़े महत्त्वपूर्ण दौर में, यानी १९४०-४६ के दौरान, भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के अध्यक्ष मौलाना अबुलकलाम आज़ाद थे । उनका जन्म १८८८ में हुआ था । वह एक बहुत ही बहादुर स्वतंत्रता सेनानी और ऐसे राष्ट्रीय नेता थे जिन का हर कोई सम्मान करता था । १९५८ में उनका निधन हुआ । वह तब तक भारत के शिक्षा मंत्री रहे ।

मौलाना आज़ाद भारत के बंटवारे के खिलाफ थे । १९४६ में उन्होंने इस की ओर ध्यान दिलाते हुए लिखा था कि अगर इस महान देश को दो टुकड़े हो जाने दें तो यह बहुत बड़ी भूल होगी ।

"दो राष्ट्र एक-दूसरे से टकराने के लिए बराबर आमने-सामने खड़े हों, तो इससे वहाँ के अल्पसंख्यकों की समस्या का कोई हल नहीं निकलता । इससे तो बल्कि आपसी दुश्मनी का सिलसिला बढ़ता है और हमेशा बदले की भावना ही काम करती रहती है । इसलिए पाकिस्तान वाली योजना से मुसलमानों की किसी समस्या का हल नहीं होगा । मैं उन लोगों में से हूँ जिनकी निगाह में भारतीय जीवन की यह सांप्रदायिक कड़ुवाहट और भेदभाव का यह अध्याय आया-गया रहेगा । मुझे पक्का यक़ीन है कि जैसे ही भारत ने अपनी नियति की ज़िम्मेदारी अपने ऊपर ली, वैसे ही ये सब चीज़ें ग़ायब हो जायेंगी । मुझे यहाँ मि. ग्लैडस्टोन की बात याद आ रही है । उनका कहना था कि किसी शख़्स को अगर पानी से डर लगता है और हमें उसका यह डर मिटाना है तो उसे पानी में धकेल दें । इस तरह भारत को अपनी ज़िम्मेदारियाँ खुद संभालनी होंगी और अपना प्रशासन भी खुद संभालना होगा । इसी से उसकी शंकाएँ और खौफ़ पूरी तह खत्म होगा ।"

यदि मौलाना आज़ाद की इस सलाह को हमने माना होता, तो हमारे इस महाद्वीप में काफी शांति रहती ।

क्या तुम जानते हो?

१. "वह ज़िंदगी में लुढ़कता हुआ आया और लुढ़कता हुआ चला गया ।" यह कौन व्यक्ति था जिसका इतिहासज्ञ लेन पूल ने इन शब्दों में उल्लेख किया है?
२. संसार में सब से गहरी खदानें कहाँ हैं?
३. बांबे डक (बंबई की मुर्गाबी) की विशेषता क्या है?
४. पारसी भारत में पहले पहल कहाँ आये?
५. भारत में ताज़ा पानी की सब से बड़ी झील कौन-सी है?

(उत्तर पृष्ठ ३६ पर)

सरस्वती

हमारे पुरातन ऋषि पावन सरस्वती नदी के किनारे रहते थे। यहीं पर वे कुछ अमर श्लोकों की रचना करने के लिए प्रेरित हुए। उनका विश्वास था कि वह महान् देवी जो उन्हें ऐसी सृजनात्मक और आध्यात्मिक प्रेरणा देती है, कल्याणकारी नदी के रूप में बहती है।

देवी सरस्वती को वाक् की देवी, यानी वाग्देवी भी कहा जाता है। इसका जन्म स्वयं परमेश्वर के मुख से हुआ बताया जाता है। विद्या और ज्ञान की देवी के रूप में इसकी पूजा होती है। यह हमारे हृदय और मस्तिष्क में प्रकाश भरती है।

सरस्वती के वस्त्र सफेद होते हैं। यह हंस की सवारी करती है। इसके एक हाथ में वीणा और दूसरे हाथ में पुस्तक रहती है।

सरस्वती नदी का इलाहाबाद के निकट प्रयाग में गंगा और यमुना से मिलन होता है, लेकिन इसके जल का प्रवाह भूमिगत रहता है और दीख नहीं पड़ता ।

युद्धों के आंकड़ों का रेकार्ड

खाड़ी युद्ध खत्म हो गया है । तमाम दुनिया के लोगों को राहत की सांस मिली है । नॉर्वे के एक आंकड़ों का हिसाब रखने वाले व्यक्ति के अनुसार पिछले ५,५६० वर्षों में इतिहास में दर्ज किया गया यह १४,५३१ वां युद्ध था । इसका अर्थ तो यह हुआ कि हर वर्ष लगभग २.५ युद्धों की विभीषिका हमें देखने को मिलती है । क्या यह युद्ध से घृणा करने के लिए काफी नहीं है?

चंदामामा की खबरें

अमरीका में पहली बार रामायण के रूपांतर

पहली बार वाल्मीकि रामायण का अमरीका में अंगरेज़ी में रूपांतर हो रहा है । यह काम बारह वर्ष पहले शुरू किया गया था । तीन विश्वविद्यालयों से जुड़े पाँच संस्कृत के विद्वान इस पर लगे हुए हैं । तीसरा खण्ड अभी हाल में प्रिंस्टन विश्वविद्यालय द्वारा प्रकाशित हुआ है । पहले खण्ड का पतली जिल्द वाला (पैपर बैक) संस्करण भी प्रकाशित हुआ है । चार खण्ड और निकलने से यह परियोजना पूरी हो जायेगी । इस परियोजना का आधार बड़ौदा में २५ वर्ष पूर्व प्रकाशित इस महाकाव्य का एक टिप्पणी-सहित संस्कृत संस्करण है ।

आओ, साहित्य की दुनिया में विचरण करें

१. रॉबिन्सन क्रूसो कितने अर्से तक एक टापू में फंसा पड़ा रहा?

२. एक आत्मकथा का नाम है 'फुल सर्कल'। उसकी किसने रचना की?

३. 'द पास्ट मास्टर्स' तथा 'ए पी.एम. ऑज पी.एम.' दो ग्रंथों को नाम हैं। उनकी रचना ब्रिटेन के दो प्रधान मंत्रियों ने की। दोनों के नाम का पहला हिस्सा एक-सा था। वे कौन थे?

४. 'ऑल इज़ वैल दैट एंड्ज़ वैल' शेक्सपीयर के एक नाटक का नाम है। यही नाम पहले रूस के एक लेखक ने अपने सुविख्यात उपन्यास को दिया। उस उपन्यास का मौजूदा नाम और उपन्यासकार का नाम बताओ।

उत्तर

सामान्य ज्ञान

१. हुमायूँ। जब वह अभी नन्हा बच्चा ही था तो उसे ऐसी बीमारी ने पकड़ा जिसका इलाज अद्भुत ढंग से हुआ। और मौत भी उसकी कैसे हुई—सीढ़ियों से गिरकर।

२. कोलार साने की खदानें, बंगलौर से ९६ कि. मी. दूर।

३. यह एक मछली है, पक्षी नहीं।

४. गुज़रात में, सन ७६० में, जब इन्होंने इस्लाम धर्म स्वीकार करने से इनकार कर दिया था।

५. कश्मीर घाटी में वुल्लर झील।

साहित्य

१. २८ वर्ष, २ महीने, १९ दिन।

२. सर एंथनी ईडन।

३. हैरोल्ड मैकमिलन तथा हैरोल्ड विल्सन।

४. लियो टॉल्स्टाय का 'वॉर एंड पीस' (युद्ध और शांति)।

चेतावनी का असर

युवरानी अट्लांटा बड़ी संदुर थी । एक दिन वह पहाड़ों में अकेली घूम रही थी कि उसे कुछ अजीब-सी आवाज सुन पड़ी । उस आवाज़ ने चेतावनी दी कि अट्लांटा शादी बिलकुल न करे, वरना ज़बरदस्त आफत टूट पड़ेगी ।

उन्हीं दिनों अट्लांटा से शादी करने की इच्छा लिये कई राजकुमारों ने अट्लांटा के पिता से संपर्क किया । राजा गहरी सोच में पड़ गया । वह समझ नहीं पा रहा था कि अट्लांटा की शादी किस से करे ।

अट्लांटा को जब इन प्रस्तावों का पता चला तो वह भी सोच में पड़ गयी । उसे पता था कि अगर उसने सीधे-सीधे शादी से इनकार किया तो उसका पिता जबरन उसकी शादी कर देगा । इसलिए उसे एक युक्ति सूझी । उसने अपने पिता से कहा, "जो राजकुमार मुझे दौड़ में हरा देगा, मैं उसी के साथ शादी करूंगी ।" भला राजा को इस शर्त से क्या आपत्ति हो सकती थी!

आखिर, दौड़-प्रतियोगिता की घोषणा कर दी गयी और साथ में यह भी घोषणा कर दी गयी कि दौड़ में हारने वालों के सर क़लम कर दिये जायेंगे। हिपोमेनस नाम का युवक निर्णायक घोषित किया गया। दौड़ के वक्त बड़े-बुज़ुर्ग सब मौजूद थे। अट्लांटा इतनी तेज़ दौड़ी कि सब देखते ही रह गये। उसने अपने सभी प्रतियोगियों को धूल चटा दी थी।

हारे हुए सभी युवकों के सर काट दिये गये। उनके बाद कुछ और युवक भी आये। पर परिणाम वही रहा। अब निर्णायक हिपोमेनस के मन में आया कि क्यों न वह भी अपनी किस्मत आज़माये।

अट्लांटा हिपोमेनस से दिल ही दिल में प्यार करती थी। इसलिए वह दुविधा में पड़ गयी। वह समझ नहीं पा रही थी कि उसे कैसे मना करे। उधर हिपोमेनस एकांत में देवी वीनस की आराधना करने लगा।

वीनस देवी प्रसन्न हुई। वह उसके सम्मुख प्रकट हुई और उसने उसे तीन सेब दिये। उसने उसे यह भी बताया कि उसे अब क्या करना होगा। हिपोमेनस बहुत खुश था। उसने देवी को शत-शत प्रणाम किया।

अट्लांटा और हिपोमेनस के बीच दौड़ शुरू हुई। उस दौड़ को देखने लोग भारी संख्या में जुटे। जब अट्लांटा ने दौड़ना शुरू किया तो वह हिपोमेनस से उसके प्रति अपना प्रेम भूलकर आगे निकल गयी। अब हिपोमेनस ने देवी वीनस द्वारा दिया गया एक सेब उसके सामने फेंका।

वह सेब बहुत ही सुंदर था, यहां तक कि उसे देखते ही अट्लांटा के भीतर उसे चखने की चाह पैदा हुई। उसने अपनी रफ्तार धीमी की और उसे उठा लिया। हिपोमेनस ने अपनी रफ्तार बरकरार रखी और अट्लांटा से आगे निकल गया। उसकी युक्ति पर वहां मौजूद लोगों ने हर्ष-ध्वनि की।
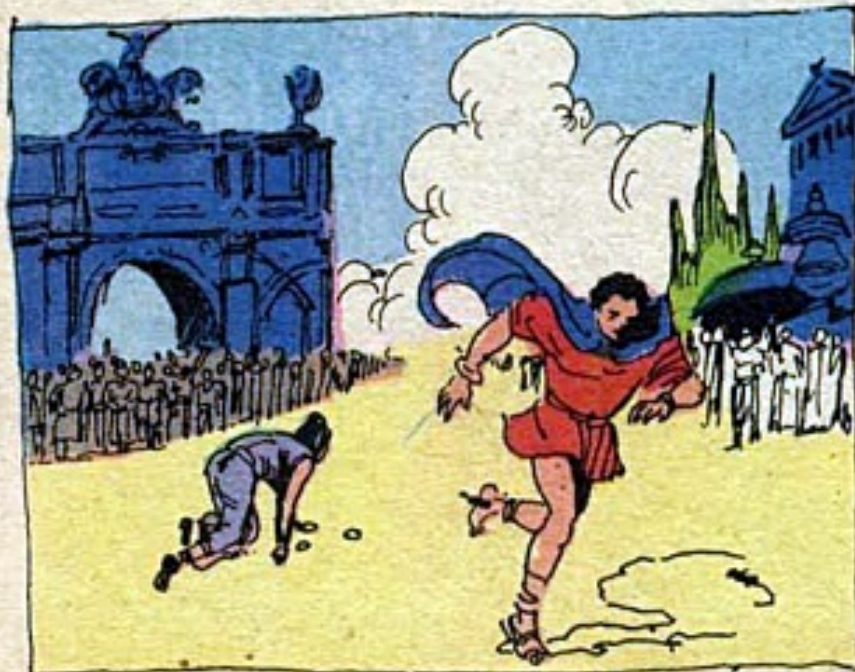
इसके बाद हिपोमेनस ने अट्लांटा के सामने दो बार और सेब फेंके और दोनों बार अट्लांटा उन्हें पकड़ने का लोभ दबा न पा सकी । इससे हिपोमेनस को आगे बढ़ने का मौका मिला और वह किसी तरह प्रतियोगिता जीत ही गया ।

अट्लांटा इस अदृश्य स्वर की चेतावनी भूल चुकी थी । उसने हिपोमेनस से शादी कर ली । दोनों बहुत खुश थे । वे इतने खुश थे कि हिपोमेनस देवी वीनस के समक्ष उसके प्रति अपनी कृतज्ञता जताना भी भूल गया ।

उनकी इस भूल पर देवी वीनस को बहुत गुस्सा आया । उसने उन्हें सिबिली नाम की देवी के माध्यम से श्राप दे दिया । दूसरे ही क्षण यह नव-दंपति शेरों में बदल गया । इस प्रकार अट्लांटा को जो चेतावनी मिली थी, वह अपना असर दिखाकर ही रही । अट्लांटा को वाकई शादी रास नहीं आयी ।

उन दिनों रोम में यूनान नाम का एक राजा राज करता था। वह बहुत बहादुर और शक्तिशाली था। उसके अधीन अनेक सामंत थे। वह किसी चर्मरोग से पीड़ित था, और रोग भी ऐसा कि उसका कोई निदान नहीं मिल रहा था। अच्छे चिकित्सक आये, पर वे रोग की जड़ को न पकड़ सके। फिर भी उसने कई प्रकार की दवाओं का प्रयोग किया, कई प्रकार के काढ़े पिये, पर बात वहीं की वहीं रही। अब राजा निराश हो चुका था।

एक बार उस राज्य में रैयान नाम का एक वयोवृद्ध चिकित्सक आया। जब उसने सुना कि राजा चर्मरोग से पीड़ित हैं, तो वह फौरन उससे मिलने गया और उससे बोला, "राजन्! अगर आपकी अनुमति हो तो मैं आपका इलाज करना चाहूंगा।"

राजा चिकित्सक की बात सुनकर खुश हो गया। बोला, "अगर तुम मुझे ठीक कर सको तो मैं तुम्हें मालामाल कर दूंगा, और तुम्हें अपने निजी दायरे में ले लूंगा।"

रैयान के रहने का प्रबंध हो गया। उसने एक औषधि तैयार की। फिर लकड़ी का एक हथौड़ा-सा बनाया और उसमें एक छेद करके छेद में वह औषधि भर दी। फिर उस हथौड़ा को एक बहुत लंबा दस्ता लगाया गया। वह दस्ता इतना लंबा था कि उससे पोलो आसानी से खेला जा सकता था।

उस दस्तेवाले हथौड़े को वह राजा के पास ले गया और बोला, "राजन्, आज आप इस हथौड़े से पोलो खेलें। तब तक खेलते रहें जब तक कि आपकी हथेलियों में पसीना न आ जाये। बस यही आपका इलाज है।"

पोलो खेल खेलने के लिए घोड़े की सवारी करनी पड़ती है। इसके अलावा ज़मीन पर गेंद फेंक कर काठ के हथौड़े से पीटते हैं।

रोम की लोक कथा

राजा देर तक उस हथौड़े के साथ पोलो खेलता रहा। आखिर उसकी हथेलियों से पसीना छूट पड़ा। तब वह वापस महल में आ गया जहां चिकित्सक उसे स्नानागर में ले गया और वहां उसे खूब नहलाया। फिर राजा गहरी नींद सो गया।

राजा की जब आंख खुली तो उसे ताज्जुब हुआ। उसके रोग का कहीं नामोनिशां तक नहीं था। वह आनंद से भर गया, और उसने चिकित्सक को दाद किया। चिकित्सक जब दरबार में आया तो राजा ने तपाक से उसे अपने गले लगाया, और उसे सम्मानपूर्वक आसन देकर अपने विशिष्ट व्यक्तियों में बैठाया। उसे ढेर-सारे नज़राने दिये गये।

उस दिन से राजा उस चिकित्सक का भारी प्रशंसक हो गया था। वह जहां कहीं भी होता, उसकी तारीफ करता। उसका कहना था, "ऐसा योग्य चिकित्सक दुनिया में और कहीं नहीं हो सकता। इसने मुझे कोई दवाई पीने को नहीं दी, कोई लेप लगाने को नहीं कहा, केवल उस लकड़ी के हथौड़े से खेलने को कहा। जो दवाई थी, उसी हथौड़े में रही होगी। क्या ऐसा इलाज और कोई कर सकता है?"

दरअसल दरबार में अब बातचीत का विषय वह चिकित्सक ही होता, और रोज़ उसे तरह-तरह के नज़राने भी मिलते। इससे दूसरे व्यक्तियों में डाह पैदा हो जाना क्या स्वाभाविक नहीं है? विशेषकर मंत्री तो बहुत ही जलने लगा था। उसकी अब बराबर, यही कोशिश रहती कि राजा और चिकित्सक के बीच किसी तरह की दरार आ जाये।

आखिर, जब उसे लगा कि उसकी कोई भी तदबीर काम नहीं कर रही है तो वह उसे एक दिन एकांत में मिला और बोला, "हुज़ूर, आप चाहे मानें या न मानें, पर आपके हित को ध्यान में रखना हमारा फर्ज़ है। आप इस वृद्ध चिकित्सक को इतना सीने से क्यों लगाये रहते हैं! यह आपके लिए संकट का कारण भी बन सकता है!"

मंत्री की बात सुनकर राजा अचंभे में पड़ गया। बोला, "तुम क्या कहते हो! तुम्हारा दिमाग़ तो ठिकाने है न! रैयान जैसा

चिकित्सक ढूंढ़े से सारी दुनिया में नहीं मिलेगा। क्या तुमने खुद नहीं देखा? जहां अच्छे से अच्छा चिकित्सक मेरे रोग को दूर न कर सका, वहां इसने, जैसे कि चुटकी बजाते हुए खत्म कर दिया। ऐसे व्यक्ति को मैं अपने विशिष्ट व्यक्तियों में जगह न दूं?"

"हुज़ूर, आप और आगे की नहीं सोच रहे।" मंत्री बोला, "खतरे की बात तो यही है कि यह चिकित्सक इतना कुशल है। वह कुशल है, इसलिए शक्तिशाली भी हो सकता है, ऐसे कुशल चिकित्सक में जिस वक्त भी अपनी शक्ति बढ़ाने की भूख पैदा हो गयी, उस समय वह कुछ भी आपके हाथ में थमा सकता है और आपकी जान ले सकता है।"

मंत्री की बात सुनकर राजा बिलकुल सन्न रह गया। यह पक्ष तो उसने कभी सोचा भी नहीं। फिर किसी तरह संभलकर उसने मंत्री से कहा "तुम सच कहते हो। पर तुम्हारी राय में इसका समाधान क्या है?"

"आप अगर मेरी राय जानना चाहते हैं तो मैं कहूँगा कि ऐसे चिकित्सक को ज़िंदा नहीं रहना चाहिए। उसका सर फौरन धड़ से अलग करवा दिया जाना चाहिए। जितनी उसे मोहलत मिलेगी, उतनी आफत नज़दीक मंडराती रहेगी। इस काम में देर नहीं होनी चाहिए।" मंत्री ने उत्तर दिया।

"तुम्हारी सलाह बेशक उम्दा है!" कहकर राजा ने उसी क्षण चिकित्सक को बुलाव भेजा।

बात की बात में चिकित्सक वहाँ हाज़िर हो गया। "आपने मुझे याद किया?" चिकित्सक ने विनम्रतापूर्वक कहा। "मैं आपके आदेश की इंतज़ार कर रहा हूं। बातइए, क्या सेवा करूं?"

"मैं तुम्हारा सर उड़वा देना चाहता हूँ। इसीलिए तुम्हें बुलवाया है," राजा ने बिना किसी भूमिका के अपनी बात कह दी।

चिकित्सक तो यह कभी सपने में भी नहीं सोच सकता था। किसी तरह अपने को संभालते हुए बोला, "पर मेरा कसूर क्या है, अन्नदाता? मैंने अनजाने में कौन-सी ऐसी भूल कर दी?"

"मुझे अभी-अभी पता चला है कि तुम मेरे शत्रु द्वारा भेजे गये जासूस हो और तुम्हें यहां मेरी जान लेने के लिए भेजा गया है। इसलिए

मैं तुम्हारा काम तमाम कर देना चाहता हूं ।" राजा ने कहा ।

"महाराज, आपको किसी ने बहका दिया है। पर अब हो भी क्या सकता है! एक-न-एक दिन सब मरना तो है ही । समझ लूंगा कि मेरा वह दिन आ गया है । पर मेरी एक चिंता है?" चिकित्सक के स्वर में पहले वाली विनम्रता बनी हुई थी ।

"वह क्या है? फौरन कहो," राजा बोला ।

"महाराज, मैं जहां रहता हूं, वहां एक बेशकीमती चिकित्सा-ग्रंथ रखा है । मैं उसे आपको भेंट करना चाहता था । उसमें कुछ अचूक नुस्खे हैं । कुछ महत्त्वपूर्ण रहस्य भी हैं । जैसे, जब मेरा सर धड़ से अलग हो जायेगा, तब भी आप जब चाहेंगे, मेरे सर से बात कर सकेंगे," चिकित्सक बिना विचलित हुए कह गया ।

राजा के मन में उस अद्भुत ग्रंथ को देखने की जिज्ञासा जागी । उसने अपने किसी चाकर को चिकित्सक के डेरे पर भेजकर वहां से उसके सारे ग्रंथ मंगवा लिये । उन ग्रंथों में से चिकित्सक ने वह अद्भुत ग्रंथ निकालकर राजा को पेश किया । राजा जल्दी-जल्दी उसके पन्ने पलटने लगा । पर अधिकतर पन्ने एक-दूसरे से जुड़े हुए थे । राजा ने अपनी जीभ से अपनी उंगली छुआयी, और उसे नम करके पन्ने एक दूसरे से अलग करने लगा । पर कहीं भी उसे कुछ लिखा हुआ नहीं मिला ।

चिकित्सक राजा की असमंजस भांप गया । बोला, "कुछ पन्ने और पलटिए । बायीं ओर के पन्ने पर तीन पंक्तियां लिखी मिलेंगी ।"

और राजा ने मुश्किल से ही तीन-चार पन्ने और पलटे थे कि वह एकाएक मूर्च्छित होकर गिर पड़ा और देखते ही देखते उसने दम तोड़ दिया ।

चारों तरफ हाहाकार मच गया । स्पष्ट ही है कि उन तीन-चार पन्नों पर इतना ज़बरदस्त ज़हर लगा था कि उसके स्पर्श मात्र से ही राजा के प्राण चले गये ।

रावण की बात सुनकर सीता भय से कांपने लगी। उसकी आवाज़ रुआं-सी हो आयी। जिस तिनके को वह अपने हाथ में लिये हुए थी, वह उसी तरह उसके हाथ में कांपता रहा। बड़ी मुश्किल से उसके मुंह से शब्द निकले:

"तुम मुझे पाने की लालसा यों ही पाले हुए हो। उसे त्याग दो। जिस तरह पापी को उत्तम लोक प्राप्त नहीं हो सकता, उसी तरह मैं भी तुम्हें प्राप्त नहीं हो सकती। मेरा जन्म एक ऊंचे कुल में हुआ है। उसकी अपनी मर्यादाएं हैं। पातिव्रत्य हमारा धर्म है। हमारे यहां स्त्री खिलवाड़ की वस्तु नहीं। यदि तुम यह चाहते हो कि तुम्हारी पत्नियां तुम्हारी ही बनी रहें, तो दूसरों की पत्नियों के प्रति भी तुम वैसा ही भाव रखो। लगता है तुम्हें सही सलाह देनेवाला अब कोई नहीं रहा। इसीलिए तुम हर प्रकार का कुकर्म करने पर उतारू हो जाते हो। या यह भी हो सकता है कि तुम्हारा विनाशकाल आ गया है, क्योंकि विनाशकाल आने पर बुद्धि तो पलटा खा ही जाती है। तुम्हारा विनाश होगा तो तुम्हारे साथ इस लंका का भी विनाश होगा। शायद तभी लोगों को चैन मिलेगा। मुझे तुम्हारी यह अपार संपत्ति, पद-प्रतिष्ठा, कुछ-नहीं चाहिए। मैं राम की पत्नी हूं। और उन्हीं की रहूंगी। मुझे तुम्हारा कोई प्रलोभन डिगा नहीं सकता। यदि तुम अपना क्षेम चाहते हो तो राम से मित्रता कर लो। इसी में तुम्हारी भलाई है। राम बहुत उदार हैं। वह बड़े क्षमाशील हैं। मैं भी तुम्हारी ओर से उन से प्रार्थना करूंगी। तुम बिना

अपने मन में और किसी प्रकार का कपट लाये उनके पास मुझे लौट जाने दो । तुम चोरी से मुझे यहां लाये हो । तुम कायर हो । तुम अधम हो । राम-लक्ष्मण अब तुम्हें जीवित नहीं छोड़ेंगे । वे तुम्हारी जान लेकर ही रहेंगे ।"

सीता की ये सब जली-कटी सुनकर रावण गुस्से से तमतमा गया । वह बोला, "सीता, जो कुछ तुम कहे जा रही हो, यह तुम्हारे वध का कारण बन सकता है । पर मुझे तुम्हारे प्रति कुछ मोह भी है । इसीलिए तुम्हें छोड़े दे रहा हूं । मैं तुम्हें दो मास की अवधि और देता हूं । अगर तुम तब भी मेरी पत्नी बनने को तैयार न हुई तो तुम्हारा अंत निश्चित है । तुम्हें मौत के मुहं से कोई नहीं बचा सकेगा ।"

रावण के मुख से सीता के लिए इतने क्रूर शब्द सुनकर वहां चौकसी पर खड़ी राक्षसियां कांप गयीं । उनके मन में सीता के प्रति दया उपजी । उनकी आंखों में उसके लिए सहानुभूति झलकने लगी । इस पर रावण उन से बोला, "तुम्हारी आंखों में सीता के प्रति सहानुभूति मैं बिलकुल नहीं देखना चाहता । बल्कि तुम लोगों को अब कोई ऐसा उपाय करना होगा जिस से सीता केवल मेरे ही बारे में सोचे और मेरी ओर आकृष्ट हो । तुम इसके लिए कोई भी उपाय करो । साम, दान, भेद, दण्ड, कुछ भी उपयोग में लाओ ।"

वहां पर रावण की सब से छोटी पत्नी, धान्यमालिनी, भी उपस्थित थी । उसने रावण को अपनी बाहों में ले लिया और बोली, "तुम्हारे लिए हम जो हैं । तुम एक राक्षस राजा हो । तुम्हें मानव स्त्रियों की क्या ज़रूरत? नियतिकार ने तुम्हारे भाग्य में इसे तुम्हारी पत्नी होना नहीं लिखा । इसीलिए यह तुम्हें ठुकरा रही है । जिसका मन तुम पर नहीं आ रहा उसे चाहने से क्या लाभ? तुम्हारे लिए मैं हूं । मैं तुम पर अपनी जान न्योछावर करती हूं । तुम मुझे ग्रहण करो ।"

रावण अपनी इस राक्षसी पत्नी की चुपड़ी बातों पर हंस दिया । फिर उसने अपने को उसके बाहुपाश से मुक्त किया और वहां से लौट पड़ा । वह जैसे ही वहां से हटा, वैसे ही वहां सीता की चौकसी कर रही राक्षसियां उसके चारों ओर जमा हो गयीं और सीता की निंदा करने लगीं । एकजटा, हरिजटा,

प्रघसा, विकटा, दुर्मुखी जैसी राक्षसियां रावण का गुणगान करने लगीं । ये बोलीं, "अरे, रावण जैसा पति तो किसी भाग्यशाली को ही मिलता है । देखो, वह कितना महान है, कितना गौरवशाली है! उसे ठुकराना बिलकुल बुद्धिहीनता है!"

सीता ने उन सब राक्षसियों को दुत्कारा, "यह तुम लोग क्या अनाप-शनाप बोल रही हो! मेरी चाहे कोई बोटी-बोटी नोच ले, मैं रावण की संगिनी कभी नहीं हो सकती । यह मेरा दृढ़ निश्चय है ।"

अब उन राक्षसियों ने सीता को डराना-धमकाना शुरू किया । उनकी ये धमकियां एक पेड़ पर छिपा बैठा हनुमान सब सुन रहा था । फिर सीता वहीं उसी पेड़ के नीचे आ गयी जिसके पत्ते-टहनियों में हनुमान छिपा बैठा था ।

अब विनता नाम की राक्षसी सीता को संबोधित कर रही थी, "माना तुम गुणवती हो, पतिव्रता हो, पर किसी चीज़ की कोई हद भी होती है । तुमने तो एक बार जो ज़िद्द पकड़ ली सो पकड़ ली । रावण के पराक्रम, उसके सौंदर्य से क्या किसी की तुलना हो सकती है? उठो, अपने को संवारो, ठीक से श्रृंगार करो, और अपने को रावण के हवाले कर दो । तुम्हारे सारे कष्ट दूर हो जायेंगे । रावण की पत्नी बनना बड़े गौरव की बात है । राम का विचार अब छोड़ो । उसकी आशा करना बेकार है । वह रावण के सामने कभी टिक नहीं पायेगा!"
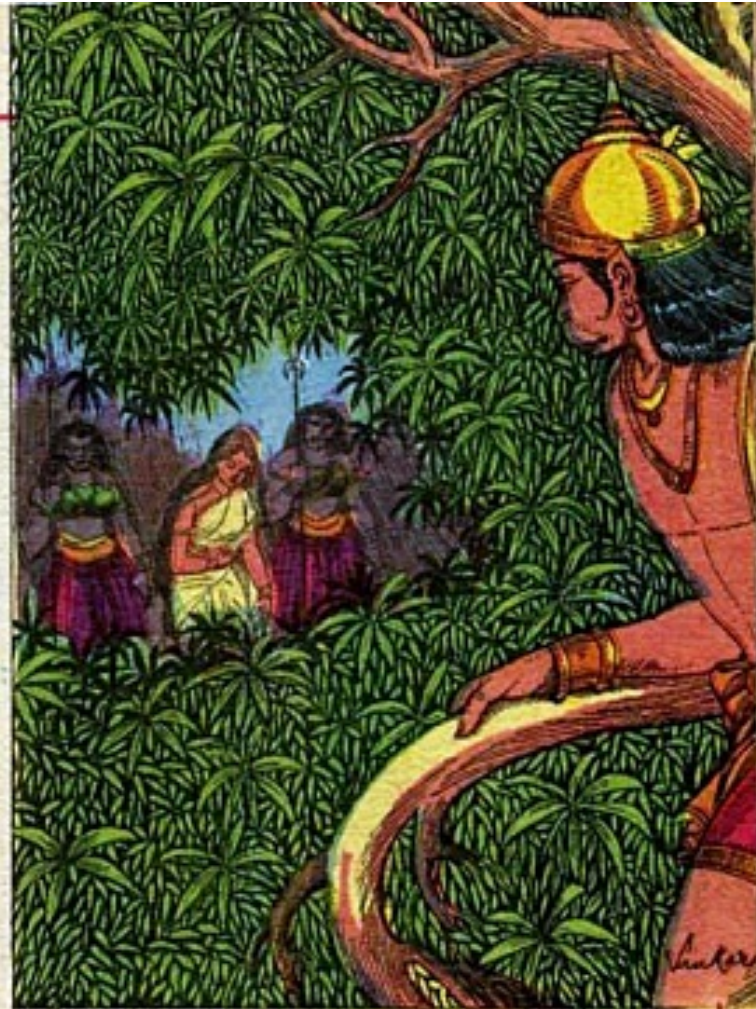
एक और राक्षसी बोली, "हम तुम्हारी भलाई के लिए ही यह सब कह रही हैं । हमारी बात मानो । तुम्हारा यह रूप—यौवन शाश्वत नहीं है! हम चाहें तो तुम्हें यों ही मरोड़ दें ।"

अब वे आपस में बतियाने लगीं, "ठीक है, हम इसे खत्म कर देती हैं । रावण से हम कह देंगी कि सीता मृत्यु लोक को सिधार गयी । हम इसे ऐसे खत्म करेंगी कि इसका कहीं पता भी नहीं चलेगा ।"

उन सब की बातें सुनकर सीता बहुत दुखी हुई । उसे उस समय अपने सभी स्वजन याद हो आये । राम की छवि तो सदा उसकी आंखों के सामने रहती ही थी । उसे लक्ष्मण, मां कौसल्या और मां सुमित्रा भी याद आ रही

थीं । उन्हें याद कर उसकी आंखें भीग गयी थीं । वह स्वयं ही अब मौत को बुलाना चाह रही थीं ।

तब तक त्रिजटा नाम की एक वृद्धा राक्षसी भी उनमें आ शामिल हुई थी । उसने सीता को घेरे बैठी राक्षसियों को फटकारा और बोली, "सीता को खत्म करने का अगर बहुत चाव है तो मुझे खत्म कर दो । शायद इससे तुम्हें कुछ संतोष मिले । पर मुझे आज बड़ा भयानक सपना आया । मैंने देखा कि राम की विजय हो गयी है और राक्षसों का सर्वनाश हो गया है!"

"यह कैसा सपना है!" सभी राक्षसियां एकसाथ त्रिजटा पर जैसे कि उमड़ पड़ीं ।

तब त्रिजटा ने उनकी ओर गहरी नज़रों से देखते हुए कहा, "सुनो, मैं तुम्हें विस्तार से बताती हूं । मैंने देखा कि राम सफेद वस्त्र पहने, सफेद फूलों की मालाओं से लदे लक्ष्मण के साथ, एक पालकी में लंका पहुंचे हैं । उस पालकी को एक हज़ार हंस ढोते हुए लाये हैं । सीता भी सफेद वस्त्रों में वेष्टित है, और सागर के बीच एक श्वेत पर्वत पर खड़ी है । वह लपककर राम से मिलती है । इसके बाद राम पहाड़ जैसे हाथी पर लक्ष्मण के साथ बैठे लंका में घूम रहे हैं । अब उनके साथ सीता भी है । हाथी अब लंका के ऊपर घूम रहा है । फिर राम, लक्ष्मण और सीता के साथ पुष्पक में बैठकर उत्तर दिशा की ओर जाते दिखाई देते हैं । अब मुझे रावण दिखाई देता है । वह कनेर की मालाएं पहना हुआ है । उसके समूचे बदन पर तेल पुता हुआ है । वह तेल ही पी रहा है । वह तेल अब नशीला पेय बन गया है । रावण पर उसका इतना नशा चढ़ जाता है कि वह कहीं ज़मीन पर गिर पड़ता है । अब मैं देखती हूं कि रावण पुष्पक से नीचे गिर पड़ा है । उसके सर पर बाल बिलकुल नहीं हैं । वह काले कपड़े पहना हुआ है, और कोई स्त्री उसे ज़मीन पर घसीट रही है । फिर मैं देखती हूं कि रावण को गधे पर बिठाकर दक्षिण दिशा की ओर ले जाया जा रहा है । एक बार वह डरकर गधे से गिरने को भी हुआ । अब मैं एक स्त्री देखती हूं । वह लाल कपड़े पहनी हुई है, पर उसके समूचे बदन पर कीचड़ पुता हुआ है । उसने रावण के गले में रस्सी बांध रखी है और उसे दक्षिण की ओर

"अब सीता से ज़रा संभलकर बात करो। अच्छा तो यही है कि उससे दूर रहो। वह राम से अब मिलने ही वाली है। बेहतर यही होगा कि हम सीता से अभयदान लें।"

पेड़ पर पत्ते की ओट में छिपकर बैठा हनुमान सब कुछ देख-सुन रहा था। सारी बात उसकी समझ में आ गयी थी। लेकिन समस्या थी सीता को अपना परिचय देने की और उसे अपने प्रति विश्वास दिलाने की। अगर वह उससे बात किये बिना ही लौट जाये, तो यह भी ठीक नहीं होगा। वह यह भी नहीं चाहता था कि राक्षसियों में संदेह जगाकर राक्षसों से यों ही युद्ध मोल लिया जाये। युद्ध में हमेशा विजय ही होगी, ऐसा मानकर क्यों चला जाये। और मान लो राक्षस युद्ध में हार जाते हैं, तब क्या उसमें इतनी शक्ति बची रहेगी कि वह समुद्र को उसी तरह पार कर ले जैसे उसने लंका तक पहुंचने के लिए किया था। और यह भी तो हो सकता है कि अगर उसने सावधानी न बरती तो सीता उसे मायारूपी राक्षस ही समझ ले और भय खा जाये।

इन सब बातों पर विचार करके हनुमान ज़ोर-ज़ोर से एक कहानी सुनाने लगा जो सीता के कानों तक भी पहुंचे:

"दशरथ नाम के एक महान् राजा के राम नाम का एक बेटा था। वह चार बेटों में सब से बड़ा था। पिता का आदेश पाकर वह अपनी पत्नी तथा छोटे भाई के साथ जंगल के लिए चल पड़ा। जंगल में राम को अनेक

घसीटकर ले जा रही है। मुझे कुंभकर्ण भी इसी तरह दिखाई पड़ा। रावण के सभी बेटे भी दिखाई दिये! वे सब तेल से अभिषेक किये हुए थे। रावण सुअर पर बैठा था। इंद्रजित मगरमच्छ पर बैठा था। कुंभकर्ण ऊंट पर बैठा था। ये तीनों दक्षिण दिशा में जा रहे थे। केवल विभीषण ही सफेद फूल-मालाएं पहने हुए था। उसके वस्त्र भी सफेद थे। उसके शरीर पर सफेद चंदन का लेप था। वह अपने चारों मंत्रियों के साथ चार दांतों वाले एक बड़े-से हाथी पर बैठा दिखाई दिया। मैंने यह भी देखा कि लंका नगरी टूटकर सागर में जा गिरी है।"

त्रिजटा अपने सपने को लंबा ही लंबा खींचे जा रही थी। फिर वह राक्षसियों से बोली,

राक्षसों को मौत के घाट उतारना पड़ा । वे राक्षस बड़े क्रूर और शक्तिशाली थे । वहां रावण नाम का एक राक्षस भी था । वह उन सबसे शक्तिशाली था । उसने जब सुना कि राम के हाथों कई राक्षस अपनी जान गंवा बैठे हैं, तो उसने मायामृग की सहायता से उन्हें प्रवंचित कर सीता का अपहरण कर लिया । राम अपनी पत्नी के लिए व्याकुल हो उठा । वह उसे ढूंढ़ता सुग्रीव से आ मिला । सुग्रीव से उसकी मित्रता हो गयी । राम ने वालि का वध किया और सुग्रीव को वानर राज्य दिलाया । सुग्रीव का आदेश पा हज़ारों वानर राम की पत्नी, सीता को ढूंढ़ने, चारों दिशाओं में निकल पड़े । मैं उन में से एक हूं । सौ योजन के विस्तार वाले समुद्र को पार करके आया हूं। राम ने मुझे सीता का जो रूप-आकार बताया था, उस रूप-आकार वाली सीता को मैं ने देख लिया है ।"

इतना कहकर हनुमान चुप हो गया । सीता उसकी बातें ध्यान से सुन रही थी । वह चकित हुई । उसने सर उठाकर ऊपर देखा । वहां उसे एक वानर दिखाई दिया ।

सफेद कपड़ों में, पेड़ के पत्तों के पीछे छिपा बैठा हनुमान् उसे बिजली की कौंध के समान दिखाई दिया । कुछ क्षणों के लिए तो वह भयभीत हो गयी । फिर वह दुखी भी हुई । ऐसे संकट में उसे केवल एक वानर ही दिखाई दिया था । वह धीरे-धीरे रोने लगी । पर वह यह भी नहीं चाहती थी कि कोई राक्षसी उसे रोते हुए देख ले । उसके मन में कई तरह के उतार-चढ़ाव आ रहे थे । लंका में उसे राम की कहानी सुनाने वाला यह कौन हो सकता है! क्या वह कोई सपना देख रही है? सपने में वानर का देखा जाना बुरा माना जाता है । इसीलिए वह ज़्यादा डर गयी थी कि राम पर कोई संकट न आ टूटे । फिर उसे ख्याल आया कि वह तो हमेशा राम के बारे में ही सोचती रहती है । इसलिए हो सकता है उसे कोई भ्रम हुआ हो । लेकिन वह यह भी चाहती थी कि जो कुछ भी उसने सुना है वह सच हो जाये । इसलिए उसने मन ही मन इंद्र, बृहस्पति, ब्रह्मा और अग्नि, सभी को याद किया और उन्हें नमस्कार किया ।

सीता अभी अपने ख्यालों में डूब-उतरा ही रही थी कि हनुमान पेड़ से नीचे कूदकर

एकदम उसके सामने आ खड़ा हुआ और उसे नमस्कार करते हुए बोला, "माता, तुम कौन हो? तुम तो कोई पतिव्रता दिखती हो! तुम उस तरह आंसू क्यों बहा रही हो? यदि तुम अरण्य से अपहरण करके लायी गयी सीता हो, तो वह भी मुझे बताओ ।"

सीता अब कुछ-कुछ आश्वस्त हुई दिखती थी । वह बिना अधिक सोचे बोली, "मैं महाराजा दशरथ की पुत्रवधू हूं । विदेह राजा जनक की पुत्री हूं । मेरा नाम सीता है । राम की ब्याहता के रूप में मैंने बारह वर्षों तक समस्त सुखों का अनुभव किया । तेरहवें वर्ष जब राम का राजतिलक होने जा रहा था तो राम की विमाता कैकयी ने इसका विरोध किया । यह अपने बेटे भरत का राजतिलक चाहती थी । उसने कहा उसकी बात यदि न मानी गयी तो वह अन्न-जल त्याग कर अपनेप्राण दे देगी उसने यह भी कहा कि राम को वनवास के लिए भेजा जाये । दशरथ ने कैकेयी को कुछ वचन दे रखे थे । वह उसमें बंधे हुए थे। इसलिए उन्हें राम का राजतिलक रोकना पड़ा । राम मातृ-पितृ भक्त हैं । उन्होंने पिता के वचनों का पालन करने के लिए वल्कल वस्त्र पहन लिये और मुझ से बोले कि मैं मां कौसल्या के पास रहूं । मैं राम के बिना स्वर्ग लोक में भी नहीं रह सकती, तब मैं वहां कैसे रहती । इसलिए मैं भी उनके साथ चलने को तैयार हो गयी । वैसे ही मां सुमित्रा का पुत्र लक्ष्मण भी हमारे साथ चलने को तैयार हो गया । हम सब दण्डकारण्य में रहने लगे । यहां राक्षस हमें समय समय पर परेशान करते थे । पर रावण ने तो हमारे साथ ज़बरदस्त चाल खेली । उसकी चाल में मैं ही आ गयी । उसने उपयुक्त अवसर देखकर मेरा अपहरण कर लिया और मुझे यहां ले आया । मुझे अब उसने दो महीने की मोहलत दी है । उसके बाद मेरी मृत्यु अवश्यंभावी है ।"

हनुमान सीता की बात बड़े गौर से सुन रहा था । सुनते-सुनते वह उदास हो गया । फिर भी जहां तक उससे बन पड़ा उसने सीता को भरपूर सांत्वना दी ।

युवरानी का हठ

चित्तपुर नाम के एक गांव में जगत नाम का एक युवक रहता था। उसके मां-बाप जब चल बसे तो वह अपने मामा के घर चला आया। मामा जो था सो था ही, पर मामी बड़ी मुंहज़ोर थी। उसका नाम ब्रह्मदेवी था। ब्रह्मदेवी क्या, ब्रह्मराक्षसी कहें। जिस दिन से जगत उनके घर आया था, उसी दिन से वह उनका क्रीत-दास बन गया। कभी घर में झाड़ू-चौका तो कभी खेत में यह कर, वह कर। नौकर जो थे उनकी छुट्टी कर दी गयी। बस हर वक्त जगत के लिए काम ही काम। उसे अपनी सुध-बुध बिलकुल नहीं रही थी, यहाँ तक कि काम करते-करते एक दिन उसका बायां हाथ ही काम करने से इनकार कर बैठा।

अब जगत बेचारा केवल एक ही हाथ से यानी अपने दायें हाथ से, काम करता था। पर ब्रह्मदेवी तो ब्रह्मदेवी थी। उसका दिल बिलकुल नहीं पसीजा। खुद तो थी एकदम मोटी। ठीक से चल-फिर भी नहीं सकती थी। ज़रा-सा भी हाथ पांव हिलाती तो हांपने लगती। इसलिए वह घर के बरामदे में लटक रहे झूले पर बैठी रहती और मूंगफली चबाती रहती। पर मूंगफली चबाते हुए भी उसकी आंख सदा जगत पर ही रहती। ज़रा-सी कहीं कोताही हुई नहीं और मामी ब्रह्मदेवी की गाली उस तक गोली की तरह पहुंची नहीं। जगत अब मामी की गालियों के कारण तिलमिलाने लगा था। उसे ब्रह्मदेवी ब्रह्मराक्षसी-सी हर कहीं दीख पड़ती।

एक साल बारिश काफी हुई। इससे मूंगफली की फसल नष्ट हो गयी। अब चित्तपुर तथा आसपास के गांवों में, कहीं मूंगफली न थी। कहीं मिलती भी तो दाम बाप रे बाप! बिलकुल असमान को छूते हुए।

ब्रह्मदेवी को पता चला कि शहर में

सरिता श्रीवास्तव

मूंगफली सस्ती है । उसने फौरन जगत को बुलाया और उसे हुक्म सुनाया, "अरे, सुन रे जगते! यहां मारे आलस के कुछ करता-धरता नहीं । जा, शहर जा, और वहां से एक बोरा मूंगफली ले आ । पर खबरदार, बोरा खुद ढोकर लाना । किसी मज़दूर के कंधे पर न लाद देना । न ही किसी गाड़ी पर लादना । यों ही पैसे बरबाद किये तो तेरी खैर नहीं! तेरी चमड़ी उधेड़े बिना न रहूंगी ।"

जगत मौन धारण किये वहां से सर हिलाकर चल दिया । चित्तपुर और शहर के बीच जंगल था । वहां खूंख्वार जानवरों का हमेशा डर रहता । उस रास्ते अकेला कोई नहीं जाता था । पर जगत लाचार था । उसे अकेले ही जाना पड़ा । फिर अकेले ही उसे उसी रास्ते से लौटना पड़ा ।

जंगल का रास्ता लंबा था । बोरे के साथ वह रास्ता अभी आधा ही तय किया था कि वह बुरी तरह थक गया । मजबूर होकर उसे वह बोरा कंधे पर से उतारना पड़ा । बोरा उतारकर उसने उसे एक पेड़ के सहारे खड़ा कर दिया और वहीं बैठकर सुस्ताने लगा ।

वहां बैठे उसे मुश्किल से दो-चार मिनट हुए होंगे कि काले कपड़े पहने वहां एक बुढ़िया आ धमकी । उसके बाल बिखरे हुए थे और उसके हाथ में एक टेढ़ी-मेढ़ी छड़ी थी । वह दूर से ही बोली, "कौन हो तुम? जिस पेड़ का मैंने बीज बोया, बड़ा किया, उसी के नीचे बैठने की तुमने हिम्मत कैसे की? उठो यहां से! यह मेरी जगह है ।"

बुढ़िया की किकियाती आवाज़ सुनकर और उसके हाव-भाव देखकर जगत सहम गया । फिर उसने किसी तरह अपना साहस बटोरा और बोला, "बुआ, मैं हूं, जागत । वाकई, तुम्हें देखकर मुझे हैरानी हो रही है । तुम में और मेरी मामी, ब्रह्मदेवी में कोई समानता नहीं । ताज्जुब है!"

बुढिया ऐसा उत्तर पाकर चौंक उठी । बोली, "क्या कहा? तुम्हारी मामी और मुझ में समानता नहीं? तुम्हारी मामी कैसी है?"

जगत बुढ़िया का प्रश्न सुनकर थोड़ी उलझन में पड़ गया । वह बोला, "मेरी मामी इस पेड़ के तने जितनी मोटी है । वह काली भी है । तुम्हारी तरह सूखी डंठल नहीं । तुम्हें

देखकर तो कोई यही समझेगा कि तुम कोई जादूगरनी हो!"

बुढ़िया को जगत की बात ज़रा भी बुरी न लगी। वह बोली, "अरे पगले, मैं सचमुच जादूगरनी हूँ! पर मैंने इतना जादू-टोना सीखा, फिर भी बीमारियों ने मेरा पीछा नहीं छोड़ा। इसीलिए मेरी यह हालत हो गयी है और मैं तुम्हें डंठल सी दिखती हूँ। चलो हटाओ, अब यह बताओ, तुम्हारे इस बोरे में क्या है?" साथ ही उसने उस बोरे में अपने हाथ की वह छड़ी भोंक दी।

जगत बुढ़िया की इस हरकत पर बिलकुल घबरा गया। उसने मज़बूती से वह बोरा पकड़ लिया। फिर धीरे से बोला, "इस में मूंगफली है। मेरी मामी इन्हें खाती है। इसीलिए वह इतनी तगड़ी है।"

"यह बात है! तुम देख रहे हो, आजकल मैं कितनी कमज़ोर हो गयी हूँ। मुझ से तो ठीक से चला भी नहीं जाता। इसलिए यह बोरा मुझे दे दो और अपनी राह पकड़ो।"

"बापरे!" जगत के तो बिलकुल हाथ पाँव फूल गये थे, "अगर मूंगफली वाला यह बोरा मैंने तुम्हारे हवाले कर दिया तो मेरी मामी मुझे कच्चा ही चबा जायेगी।"

जगत की बात सुनकर बुढ़िया कुछ सोचने लगी। फिर बोली, "तो ठीक है, इसके बदले में मैं तुम्हें, जो चाहो, दे सकती हूं। मुझे तो ताकत चाहिए। देखो, मेरे पास एक मुर्गी है जो अंडे न देकर सीधे चूज़े देती है। ऐसी मुर्गी तुम्हें दुनिया में और कहीं नहीं मिलेगी! बोलो, मंज़ूर है?"

"मुर्गी से क्या होगा!" जगत बोला, "उसे तो मेरी मामी ऐसे ही भूनकर खा जायेगी।"

"चलो, तुम्हें मुर्गी के साथ-साथ एक ऐसी गाय दिये देती हूं जो दूध के बदले पानी देती है। बोलो, अब मंज़ूर है?"

"न बाबा न," जगत ने अपनी पहले वाली घबराहट में कहा, "ऐसी गाय को तो मेरी मामी घर में पैर भी नहीं रखने देगी। वह ब्रह्मराक्षसी है, ब्रह्मराक्षसी!"

"अच्छा, तो सुनो। इसके साथ-साथ मैं तुम्हें एक बोलने वाला कौआ भी देती हूं। अब तो सौदा ठीक है न!" बुढ़िया ने प्रश्न किया।

"मेरी मामी के सामने तो आदमी भी

अपना मुंह नहीं खोल पाता । तब इस कौए की क्या बिसात? इसकी बोलती तो यों बंद हो जायेगा!" जगत ने फिर कहा ।

जगत का उत्तर सुनकर बुढ़िया बिलकुल लाचार दिखने लगी । उसकी आंखों में आंसू भर आये । वह जगत से अनुरोध करते हुए बोली, "तुम मुझे भी अपना कोई सगा समझ लो, बेटे! इन चीज़ों के अलावा मेरे पास और कुछ नहीं है । ये तीनों ले लो और मुझे यह मूंगफली वाला बोरा दे दो! मैं तुम्हारा बड़ा एहसान मानूंगी ।"

बुढ़िया की आंखों में आंसू देखकर जगत का दिल पसीज गया । उसने मूंगफली का वह बोरा उसके हवाले कर दिया । बुढ़िया उसे अपने साथ अपनी झोंपड़ी पर ले गयी । झोंपड़ी गहरे जंगल में थी । वहां उसने उसे चूज़े देने वाली वह मुर्गी, पानी देने वाली गाय और आदमी की बोली बोलने वाला वह कौआ दे दिया ।

रात भर वह वहीं रहा । दूसरे दिन सुबह हुई तो वह वहां से चल पड़ा । तब कौआ बोला, "तुम आगे-आगे चलो, मैं तुम्हारे पीछे-पीछे चलूंगा । जैसे ही तुम ज़ोर से ताली बजाकर मुझे बुलाओगे, मैं हाज़िर हो जाऊंगा, और तुम्हारे बाजू पर आ बैठूंगा । डरना नहीं । मैं कहीं भागूंगा नहीं ।"

चलते-चलते जगत को शाम हो गयी । वह एक गांव में पहुंचा । लेकिन जैसे ही उसने गांव में कदम रखा, बारिश शुरू हो गयी । इसलिए मजबूर होकर उसे पास ही एक सराय में आश्रय लेना पड़ा ।

जगत से पहले सराय में एक वैद्य ठहरा हुआ था । वह एक नामी वैद्य था । जगत की मुर्गी ने सराय के चबूतरे पर चूज़े को ज़न्म दिया, तो वैद्य हैरान रह गया । उसने जगत से कहा, "कमाल है यह तो! मुर्गी सीधे चूज़े देती है! क्या तुम ही इस मुर्गी के मालिक हो?"

जगत ने 'हां' में सर हिला दिया । तब वैद्य बोला, "क्या तुम मुझे यह मुर्गी बेचोगे?"

"ऐसी कमाल की चीज़ें क्या कोई बेचता है?" जगत ने उलटा उससे प्रश्न किया ।

"बात्त तो तुम ठीक कहते हो!" वैद्य ने कहा । फिर कुछ सोचकर बोला, "मैं इसके बदले तुम्हारा बेकार हाथ ठीक कर दूंगा । तुम आज रात तो यहीं हो न! मैं तुम्हें ऐसा लेप

लगाऊंगा कि सुबह तक तुम्हारा यह बाज़ू ठीक हो जायेगा। अब तो तुम्हें मंजूर है न?"

वैद्य का प्रस्ताव जगत ने मंज़ूर कर लिया। रात हुई और वैद्य ने उसके बाज़ू पर लेप लगा दिया। काफी अच्छी तरह लेप लगाया गया था। सुबह जब जगत की आंख खुली तो वह हैरान रह गया। उसका बाज़ू पहले की तरह ही काम कर रहा था। कहीं किसी प्रकार की कोई बाधा न थी। जगत ने अपने कहे अनुसार अपनी वह चूज़े देने वाली मुर्गी वैद्य के हवाले कर दी। और खुद गाय और कौए के साथ उस सराय से निकल पड़ा।

दोपहर हुई तो वह एक पहाड़ी इलाके में पहुंचा। वहां गरमी बला की थी। धूप चिलचिला रही थी। एक मोड़ पर, झाड़ियों के बीच उसे किसी के कराहने की आवाज़ सुन पड़ी। आगे बढ़कर देखा तो वहां एक अधेड़ उम्र का आदमी दीख पड़ा। उसके बदन पर जहां-तहां कई घाव थे।

जगत पर उसकी नज़र पड़ी तो बोला, "गला बुरी तरह सूख रहा है। क्या तुम्हारे पास पीने का थोड़ा पानी है?"

उस घायल आदमी की मांग सुनकर जगत थोड़ा परेशान हो गया। उसने चारों तरफ आंख उठाकर देखा। पानी का कहीं निशान न था। अब क्या किया जाये? फिर उसे एकाएक याद आया कि उसके साथ जो गाय है, वह दूध के बजाय पानी ही तो देती है! उसने फौरन आस-पास से कुछ पत्ते इकट्ठे किये, उनका दोना बनाया और उन में गाय को दुहने लगा। दोना कुछ ही क्षणों में पानी से भर गया। वह पानी उसने उस घायल
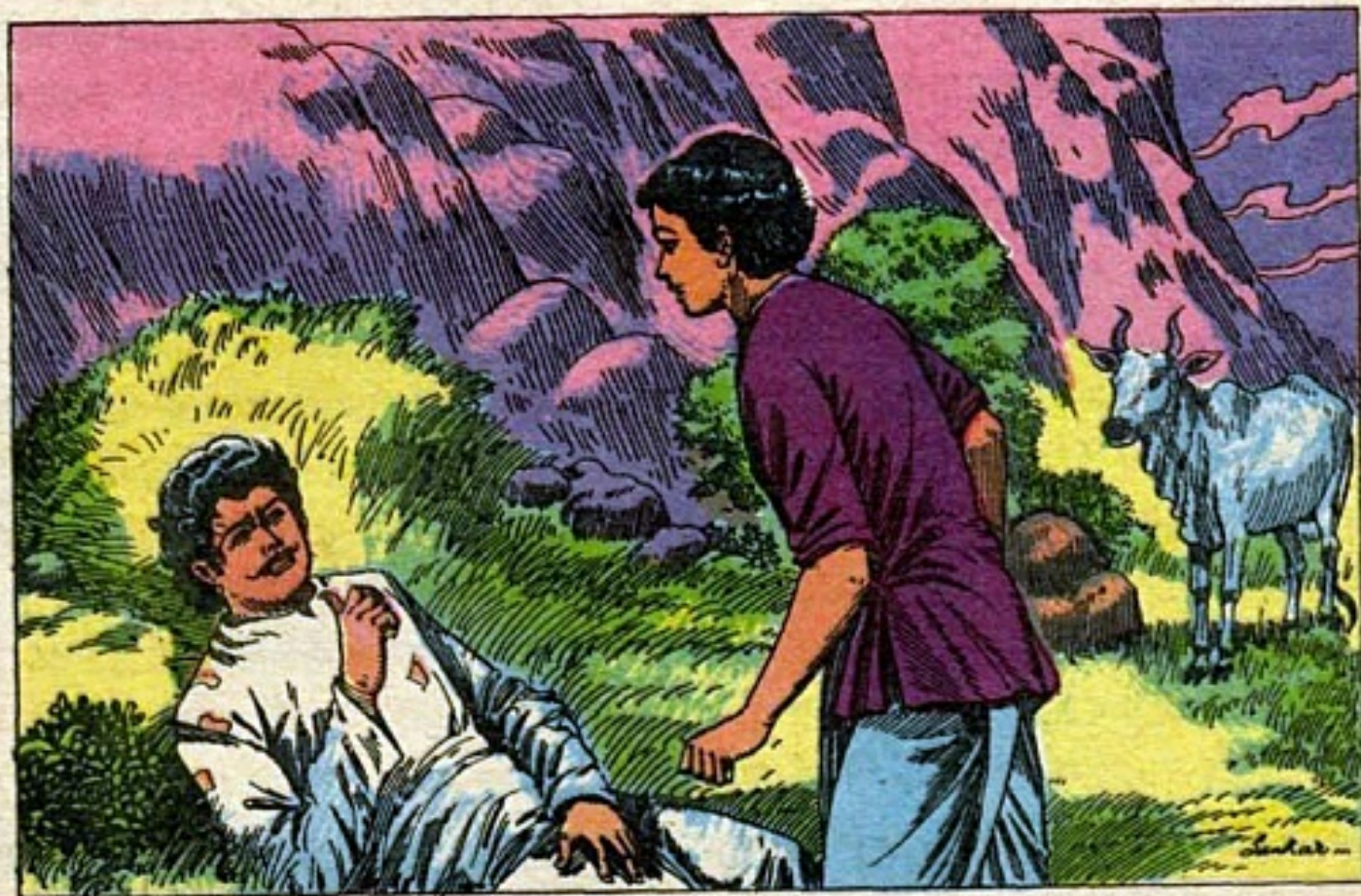
व्यक्ति को पिलाया । पानी पी लेने से उस व्यक्ति की जान में जान आयी । वह उठकर बैठ गया और जगत को अपने बारे में बताने लगा । उसकी बातों से जगत को पता चला कि वह एक धनी व्यक्ति है जिसे लुटेरों ने मार-पीटकर यहां फेंक दिया था और उसके पास जो माल-संपत्ति थी, उसे लेकर चलते बने थे ।

"तुम ने मुझ पर बड़ा उपकार किया है । अगर तुम मुझे यह पानी न पिलाते तो मेरी जान न बचती," उस धनी व्यक्ति ने जगत के प्रति अपनी कृतज्ञता दिखाते हुए कहा ।

"महोदय, आप की जान बची है तो इसका श्रेय मुझे बिलकुल नहीं, सब इस गाय की कृपा से हुआ है । यह न होता तो यहाँ पानी मिलना असंभव था," जगत ने सहज ही उत्तर दिया ।

जगत की बात सुनकर वह धनी व्यक्ति आश्चर्य से भर गया । बोला, "यह गाय दूध-की जगह पानी देती है! ग़ज़ब!" फिर गाय की ओर ध्यान से देखने लगा । उसके भीतर गाय के प्रति बड़ा स्नेह उमड़ आया था । बोला, "अच्छा, तो मेरे प्राण बचाने वाली यह गाय है! मैं चाहता हूँ इसे मैं अपने घर ले जाऊँ और वहाँ इसकी पूजा करूँ ।"

उस धनी व्यक्ति के साथ जगत अब उसके घर पहुंचा । वहाँ उसका खूब आदर-सत्कार हुआ । गाय के बदले में उस धनी व्यक्ति ने उसे एक थैली-भर सोने के सिक्के दिये । सिक्के लेकर जगत वहाँ से चल पड़ा । उसका कौआ उसके पीछे-पीछे था ।

सब से पहले जगत ने उन सिक्कों से एक सफेद घोड़ा और राजसी ठाठ की पोशाक खरीदी । फिर उस पोशाक को पहनकर और सफेद घोड़े पर सवार होकर वह राजधानी की ओर चल पड़ा ।

वह राजधानी में प्रवेश करने को ही था कि उसे पास की एक पहाड़ी पर एक सुंदर-सा मंदिर दीख पड़ा । उसके भीतर भगवान के दर्शन करने की इच्छा जागृत हुई । वह सीधा उसी पहाड़ी पर गया । जैसे ही वह मंदिर के द्वार पर पहुँचा, वैसे ही उस देश की युवरानी मंदिर में पूजा समाप्त करके अपनी सहेलियों के साथ बाहर आयी । सामने ही जगत अपने सफेद घोड़े पर सवार, राजसी ठाट-बाट में

उसे दीख पड़ा । जगत को देखकर कुछ क्षणों के लिए तो युवरानी स्तब्ध रह गयी । यह युवक कौन हो सकता है? किस देश का यह राजकुमार है? वह इन्हीं प्रश्नों से जूझ रही थी कि जगत ने साहस बटोरकर युवरानी की तरफ प्रश्न उछाला, "मेरी तरफ इस तरह देखने वाली तुम कौन हो?"

जगत के उस प्रश्न पर युवरानी चकित रह गयी । उसके साथ उसकी सहेलियाँ भी उसी तरह चकित हो रही थीं । तब जगत ने ज़ोर-ज़ोर से ताली बजाकर अपने पीछे रह रहे कौए को बुलाया और उससे पूछा, "बोलो, यह अद्‍भुत सुंदरी कौन है? यह मेरे प्रश्न का उत्तर क्यों नहीं देती?"

"इतना सब रूप-सौंदर्य, और इतनी सब सहेलियाँ-यह सब देखते हुए भी आप पहचान नहीं पा रहे? यह जरूर इस देश की युवरानी होगी," कौए ने उत्तर दिया, "क्यों ठीक है न?" अब कौआ युवरानी से अपनी बात का समर्थन चाह रहा था ।

कौए का अनुमान ठीक ही था । वह उस देश की युवरानी त्रिलोक सुंदरी थी । कौए को आदमी की भाषा बोलते सुन वह हैरान रह गयी और बोली, "वाह! खूब! यह तो मैं पहली बार देख रही हूँ । क्या कभी ऐसा भी हो सकता है!" और यह कहकर वह अपनी सहेलियों के साथ पहाड़ी से नीचे उतरने लगी ।

उधर जगत खुद हैरान था । यह सब हो क्या रहा है । खैर, उसने चुपचाप मंदिर में प्रवेश किया और भगवान् के दर्शन करके वहाँ से लौट पड़ा । जब वह पहाड़ पर से नीचे
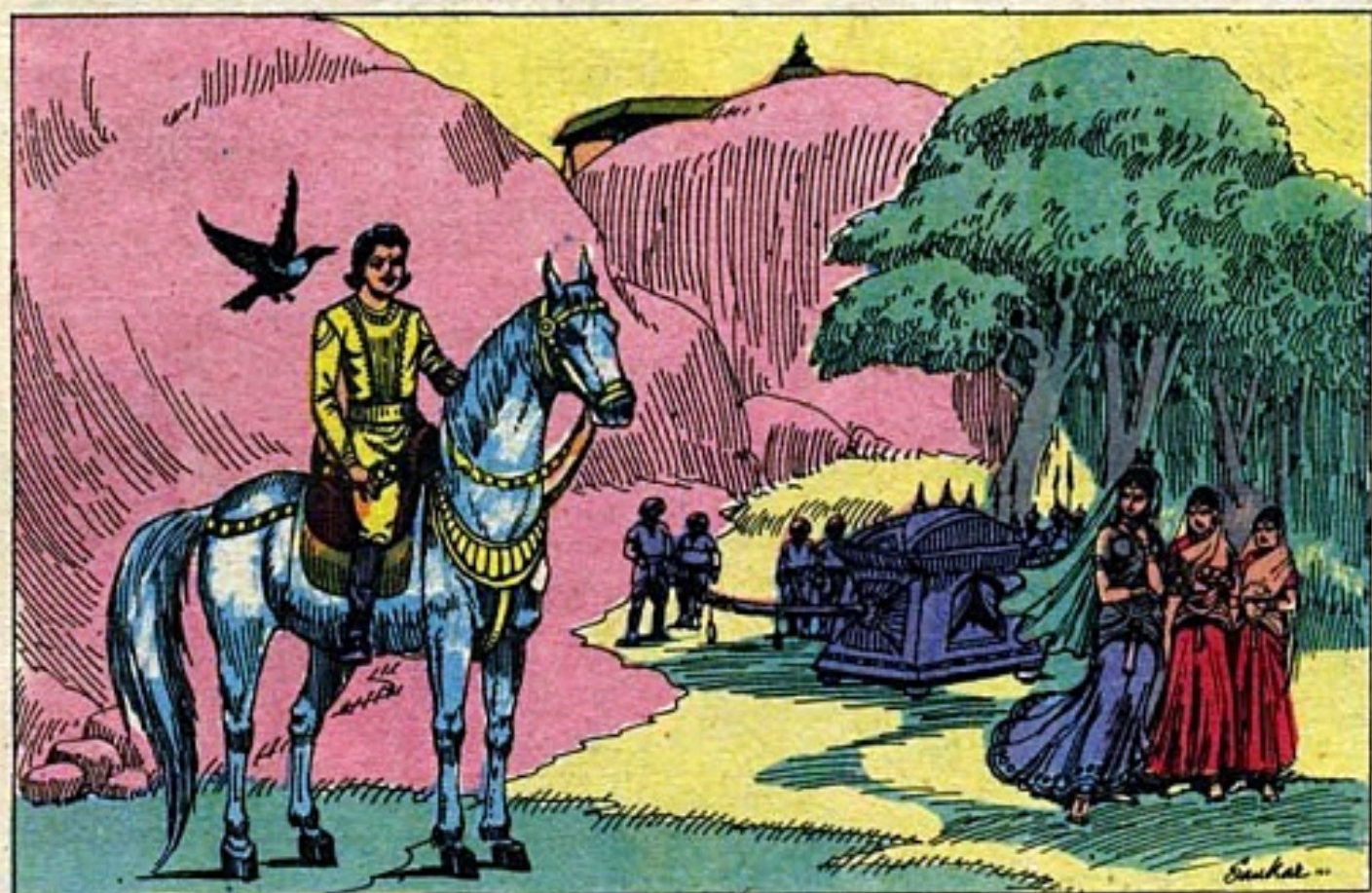
आया तो उसे वहाँ राजा के आदमी उसका इंतज़ार करते मिले। वे उसे पूरी शानोशौकत के साथ राजभवन की ओर ले चले।

त्रिलोक सुंदरी का पिता, यानी वहाँ का राजा तो यही चाहता था कि उसकी बेटी की जल्दी से जल्दी शादी हो और वह राज्य का सारा भार अपने दामाद के कंधों पर छोड़कर स्वयं मुक्त हो जाये। उधर युवरानी का यही हठ था कि वह किसी ऐरे-गैरे से शादी नहीं करेगी, बल्कि उससे शादी करेगी जो कुछ अद्‌भुत करके दिखाये, और ऐसे ही उसने दो-तीन साल बिता दिये थे। कई राजकुमार आये, लेकिन सभी को खाली हाथ लौटना पड़ा। उसे किसी में वह क्षमता नहीं दिखी थी जिससे वह प्रभावित होती। लेकिन जब जगत ने अपने कौए को बुलाकर उससे आदमी की बोली में उत्तर पाया तो युवरानी प्रभावित हुए बिना न रह सकी। परिणाम स्वरूप एक पखवाड़े के भीतर ही जगत और त्रिलोक सुंदरी का विवाह हो गया और जगत उस देश का राजा बन गया।

लेकिन जगत अपनी गुलामी के दिन भूला नहीं था। उसे अपनी मामी, ब्रह्मदेवी, की भी याद थी। उसने कौए को भेजकर उसे अपने यहाँ बुलवाया।

मामी आयी तो तपाक से बोली, "अरे बेटा, मैं बड़ी पापिन हूँ। मैंने तुझे बड़े कष्ट दिये। अपनी जिह्वा के स्वाद के लिए मैंने तुम्हें मूंगफली का बोरा शहर से उठा लाने को कहा। मुझे क्षमा कर दो।"

जगत का मन बिलकुल साफ था। उसमें कहीं कोई कलुष नहीं था। वह हंसकर बोला, "अरे मामी, कैसी बात करती हो! तुम मेरी बड़ी हो। आज अगर मैं यह सब सुख पा सका हूँ तो उन्हीं दिनों की तकलीफों के कारण। वे तकलीफें न होतीं तो आज यह सुख भी न होता। वे तकलीफें तो मेरे लिए वरदान हो गयीं।"

तीसरी बहू

बहुत पहले हस्तिनापुर में शिवदत्त नाम का एक ब्राह्मण रहता था। काफी धनी था वह, घर में हर वक्त चख-चख रहने के कारण वह दुखी रहता। पत्नी बदमिजाज़ तो थी ही, झगड़ालू और क्रूर भी थी। एक दिन लाचार होकर शिवदत्त साधु बन गया, और उसने घर-बार छोड़ दिया।

शिवदत्त के तीन बेटे थे। तीनों ही सुशील थे। पहले बेटे की शादी हुई। पर जैसे ही उसकी बीवी घर आयी, शिवदत्त की पत्नी, यानी सास, बहू पर टूट पड़ी और उसके नाक में उसने दम कर दिया। जब बहू से सास की प्रताड़ना सहन नहीं हुई तो वह मायके चली गयी और उसका पति भी वहीं पहुंचा।

कुछ समय बाद शिवदत्त के दूसरे बेटे की शादी हुई और वह अपनी बीवी घर लाया। बहू बहुत ही शांत प्रकृति की थी। इसलिए वह अपनी सास का हर वार सहती थी। पर एक दिन उसका धीरज उसका साथ छोड़ गया, और उसनें अपने गले में फंदा लगाकर प्राण त्याग दिये। इस घटना से उसके पति को आघात पहुंचा, और उसने प्राण त्याग दिये।

शिवदत्त के सब से छोटे बेटे का नाम वसुदत्त था। वह अपनी मां के व्यवहार से बहुत परेशान था। वह अपनी मां को सही राह पर लाने को मज़बूर था। पर वह यह भी चाहता था कि लोग उसकी बात पर यकीन करें और सच्चाई को समझें।

पड़ोसी गांव में उसने एक युवती की आदमकद काठ की मूर्ति तैयार करवायी, उसे वह आधी रात में अपने गांव ले आया, उसे किराये के एक मकान में ले गया। वहां उसने अपने विश्वास की नौकरानी को चाकरी पर रख लिया। फिर वह अपने घर आया और अपनी मां से बोला, "मां, मैंने शादी कर ली है। पर मैं बीवी को यहां नहीं लाया, पास के

२५ वर्ष पूर्व चंदामामा में प्रकाशित कहानी

उस मकान में छोड़ आया हूं । मैं नहीं चाहता कि आये दिन फिज़ूल के झगड़े होते रहें । अब न वह यहां आयेगी और न ही तुम वहां जाओगी ।"

वसुदत्त की मां लाचार हो गयी । पर साथ-साथ उसे गुस्सा भी बहुत आया । एक दिन वसुदत्त जब घर पर नहीं था तो उसने मूसल से अपना सर फोड़ लिया और लगी शोर मचाने कि उसकी सब से छोटी बहू ने उसे घायल कर दिया है । अड़ोस-पड़ोस से लोग इकट्ठे होने शुरू हो गये । इतने में वसुदत्त भी वहां आ पहुंचा ।

इस पर वसुदत्त की मां और ज़ोर-ज़ोर से रोने लगी और बोली, "यह मेरी नयी बहू की करतूत है । मैं चुपचाप यहां बैठी चावल बीन रही थी कि वह चुपके से अपने घर से आयी और धांय-धांय मेरे सर पर मूसल से वार करके चली गयी ।"

वसुदत्त की मां की बात सुनकर पड़ोसियों को बहुत गुस्सा आया । वे सीधे वसुदत्त के घर पर पहुंचे और उन्होंने ज़ोर से धकेलकर दरवाज़ों को खोला ।"

पर यह क्या? बहू तो वहां थी नहीं । वहां तो केवल एक युवती के आकार की काठ की मूर्ति थी । अब कुछ कहने की बारी वसुदत्त की थी । सब को संबोधित करते हुए वह बोला, "यही है मेरी बहू, इसे सब ध्यान से देख लो । इसी ने मेरी मां के सर पर मूसल से वार किया और इसी ने उसका सर फोड़ा ।"

वसुदत्त की. बात सुनकर चारों तरफ स्तब्धता छा गयी । वसुदत्त की मां के अब काटो तो खून नहीं । उसे कोई उत्तर नहीं सूझ रहा था । उस की पोल खुल चुकी थी । पड़ोस की औरतों ने उसे बुरी तरह फटकारा ।

वसुदत्त को अब पूरा यकीन था कि वह शादी करेगा तो उसकी मां उसकी पत्नी को बिलकुल नहीं सतायेगी । इसलिए उसने तुरंत अपनी शादी रचायी और अपनी बहू को घर ले आया । वाकई, उसकी मां के व्यवहार में ढेरों अंतर आ चुका था । उसने अपनी बहू को अपने सीने से लगाया और उसे खूब प्यार किया ।

जलहस्ती

जलहस्ती (हिप्पोपॉटमस) नदी तल पर बहुत तेज़ दौड़ सकता है, और दस मिनट तक पानी के भीतर ही रह सकता है ।

दीर्घकायी पक्षी

एक पक्षी है टेरोज़ार क्वेटजाल कोट्लस नीर्थरोपी । यह एक प्रकार का डायनोसॉर ही है । यह आज से कोई ६ करोड़ ५० लाख वर्ष पहले पाया जाता था । इसके अवशेष १९७४ में अमरीका के टेक्सास में मिले हैं । इसके एक पंख का वज़न ८६ किलो ग्राम और इसकी लंबाई ५० फुट थी ।

स्तनपायी जीव विषैला भी!

आस्ट्रेलिया में पाया जाने वाला डकबिल्ड प्लाटिपस एक ऐसा प्राणी है जो स्तनपायी भी है और उसकी ग्रंथियों में विष भी रहता है ।

बढ़ते पैरों का सच्चा साथी

फोटो परिचयोक्ति प्रतियोगिता :: पुरस्कार ५०)

पुरस्कृत परिचयोक्तियां सितम्बर १९९१ के अंक में प्रकाशित की जाएंगी।

G. Srinivasamurthy

Anant Desai

★ उपर्युक्त फोटो की सही परिचयोक्तियां एक शब्द या छोटे वाक्य में हों। ★ १० जुलाई '९१ तक परिचयोक्तियां प्राप्त होनी चाहिए। ★ अत्युत्तम परिचयोक्ति को (दोनों परिचयोक्तियों को मिलाकर) ५० रु. का पुरस्कार दिया जाएगा। ★ दोनों परिचयोक्तियां केवल कार्ड पर लिखकर निम्न पते पर भेजें: चन्दामामा फोटो परिचयोक्ति प्रतियोगिता, मद्रास-२६

मई १९९१ की प्रतियोगिता के परिणाम

प्रथम फोटो : इन की नन्हीं दुनिया प्यारी!

द्वितीय फोटो : है संकट में जान हमारी!!

प्रेषक : राजू दास, द्वारा घासीदास मिनकपुरी, खरगपुर (प. बं.)

Printed by B.V. REDDI at Prasad Process Private Ltd., 188 N.S.K. Salai, Madras 600 026 (India) and Published by B. VISHWANATHA REDDI on behalf of CHANDAMAMA PUBLICATIONS, Chandamama Buildings, Vadapalani, Madras 600 026 (India). Controlling Editor: NAGI REDDI.

SUPER CHAMPS
COLLECTION
SCHEME
FREE
स्पोर्टस्टार स्टिकर
सुपर मज़ा! सुपर इनाम!
24 स्टिकर इकट्ठे करो।
और जीतो शानदार उपहार।
हर नये 25 हाज़मोला कैन्डी 'सुपरचैम्प्स' पैक के भीतर है आपके मनपसंद स्पोर्टस्टार के स्टिकर। इमरान खान, इवान लैंडल, स्टैफ़ी ग्राफ़ और अन्य कई मशहूर खिलाड़ी।
5 स्टिकर इकट्ठे करो और पाओ एक शानदार 'सुपरचैम्प्स' एलबम। इतना ही नहीं तुम हाज़मोला कैन्डी क्लब के सदस्य भी बन जाओगे। (विवरण प्रत्येक 'सुपरचैम्प्स' पैक के भीतर है)
जल्दी करो! अपना 'सुपरचैम्प्स' कलेक्शन आज ही शुरू कर दो!
Hajmola
CANDY
SURPRIZE
पहली 1000 पूरी एलबम भेजने वालों के लिए
everest/491/DIL/69 hn
Khatti Meethi
Hajmola
CANDY

CHANDAMAMA (Hindi) July 1991 Regd. No. M. 5452